

हरिभूमि महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार, 13 जुलाई 2025

11 शेखावाटी जैसे क्षेत्र में युवाओं को आगे बढ़ने का मार्ग...



12 चार दिन में बीत जाने के मांग के बाद भी जिला प्रशासन ने की पेश...



अब एचएसवीपी व जनस्वास्थ्य विभाग की संपत्ति अटैच

ऐसा हो पार्षद, सीवरेज व्यवस्था नहीं सुधरी तो दी कोर्ट में दस्तक

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल
किसी पार्षद को जनता इस लिए चुनती है कि वह उनकी जनसमस्या को दूर करवाने के लिए प्रयासरत रहे। हुडा सेक्टर की सीवरेज व्यवस्था सुधरवाने के लिए प्रशासन या फिर सरकार से जब बात नहीं बनी तो एक पार्षद ने हार नहीं मानी। पार्षद ने साल 2019 में यूटील्टी कोर्ट का दरवाजा खटखटया। कोर्ट ने 21 हजार का जुर्माना संबंधित विभाग पर लगाया। फिर भी बात नहीं बनी तो लड़ाई जारी रखी। पार्षद सिविल जज सीनियर

डिवीजन की अदालत में पहुंच गया। लंबी बहस और कोर्ट में न्याय की उम्मीद लगाए बैठे पार्षद का पक्ष सुना गया। नतीजन, अदालत ने एचएसवीपी व जनस्वास्थ्य विभाग की संपत्ति अटैच करने की बारी आ गई। सिविल जज सीनियर डिवीजन गुरप्रीत कौर की अदालत ने जनस्वास्थ्य विभाग की एक बुलेरो गाड़ी व एक पेमेंट अकाउंट तथा एचएसवीपी की एक बुलेरो गाड़ी को अटैच करने के ऑर्डर दिए हैं। नारनौल में एक ही हुडा सेक्टर है। हुडा सेक्टर एक पहले वार्ड नंबर 25 में आता था। इसके बाद अब वह वार्ड नंबर



नारनौल। आठ जनवरी को प्रकाशित समाचार।

31 बन गया है। कपिल यादव को यहां के मतदाताओं ने लगातार दूसरी बार पार्षद चुना है। हरिभूमि से बातचीत करते हुए वार्ड पार्षद कपिल यादव ने बताया कि जनसमस्या के लिए पहले संबंधित विभाग से कई बार गुहार लगाईं लिखित

में दिया। बात नहीं बनी तो जिला प्रशासन के पास गए और जनसमस्या से अवगत करवाते हुए समाधान की गुहार लगाईं। यहां भी सिर्फ आश्वासन ही मिला। समस्या देखी नहीं जा रही थी। समाधान भी स्थाई करने की सोच थी। इसी वजह से वह मजबूरन कोर्ट में गए और वहां अपना पक्ष मजबूती से रखा। उन्होंने बताया कि वे साल 2019 में अपने केस को यूटील्टी कोर्ट में लेकर गए तथा सुविधाओं की मांग की। उन्होंने कोर्ट में बताया कि सेक्टर एक का सीवरेज सिस्टम 80 प्रतिशत तक खराब है। यह केस 2024 तक चला।

यूटील्टी कोर्ट ने लगाया था 21 हजार का जुर्माना



पार्षद कपिल यादव की माने तो यूटील्टी कोर्ट ने इस केस पर सुनवाई करते हुए सेक्टर एक से संबंधित एचएसवीपी व जनस्वास्थ्य विभाग सीवरेज पर 21 हजार रुपये का जुर्माना लगाया था। साथ ही सीवरेज व्यवस्था को दो माह में ठीक करने के आदेश भी दिए थे। दो माह बीत जाने के बाद भी सीवरेज व्यवस्था ठीक नहीं हो पाई। कपिल यादव ने बताया कि दो माह बीत जाने के बाद भी जब दोनों विभागों की ओर से सेक्टर एक में कुछ भी काम नहीं किया गया तो उन्होंने सिविल जज सीनियर डिवीजन की अदालत का दरवाजा खटखटया और अपना पक्ष कोर्ट के सामने रखा। आपको बता दें कि इस संबंध में हरिभूमि ने आठ जनवरी 2025 को 'सुनवाई में लगे 5 साल, फिर कोर्ट ने 2 माह में समाधान के लिए थे निर्देश, फिर भी हुडा सेक्टर की समस्या को किया अनजुबा' शीर्षक से समाचार भी प्रकाशित किया था।

यह जारी किए कोर्ट ने आदेश

इस मामले में सिविल जज सिनियर डिवीजन गुरप्रीत कौर की अदालत ने पहले संबंधित विभागों से इनकी संपत्ति का हथौड़ा मांगा। उसके बाद अदालत ने शुक्रवार को आदेश सुनाते हुए जन स्वास्थ्य विभाग को एक बुलेरो गाड़ी व एक पेमेंट अकाउंट तथा एचएसवीपी की एक बुलेरो गाड़ी कोर्ट से अटैच करने का ऑर्डर दिया

खबर संक्षेप

गौड़ धर्मशाला में लगाया निःशुल्क चिकित्सा शिविर
नांगल चौधरी। श्री गौड़ धर्मशाला में मेदांता अस्पताल के तत्वाधान में लगाए चिकित्सा शिविर में 250 मरीजों के विभिन्न चेकअप किए गए। जांच रिपोर्ट के आधार पर पीड़ितों को निःशुल्क दवाइयां तथा उपचार मुहैया कराया। गौड़ सभा के प्रधान राधेश्याम शर्मा ने बताया कि अधिकांश ग्रामीण स्वास्थ्य को लेकर जागरूक नहीं होते तथा छोटी-छोटी बीमारियों की ओर से ध्यान नहीं देते हैं। समय पर इलाज नहीं मिलने के कारण छोटी बीमारी बड़ी बन जाती है, जिसका इलाज कराना संभव नहीं होता।

सीवरेज का ढक्कन खुला, लोग परेशान
नारनौल। दयानगर में एनफ्रील्ड एजेंसी के पास स्थित गली में सीवरेज का खुला ढक्कन एक बड़ा समस्या बन गया है। इस सीवरेज का ढक्कन करीब 40 दिनों से नहीं है। जिससे बदबू व मच्छरों की समस्या बढ़ गई है। इसके अलावा बारिश के दौरान सीवरेज का पानी बाहर आ जाता है, जिससे दुर्घटना का खतरा और भी बढ़ जाता है। कालीनो वासियों ने बताया कि खुला सीवरेज दुर्घटना को निमित्त दे रहा है, खासकर बुजुर्गों व दोपहिया वाहन चालकों के लिए ज्यादा परेशानी हो रही है।

कृष्णावती में छोड़े जा रहे गंदे पानी से ग्रामीणों को परेशानी

हरिभूमि न्यूज ►► मंडी अटेली

सिहमा खंड के गांव सलूनी के पास से गुजरने वाली कृष्णावती नदी में आ रहे गंदे पानी से ग्रामीण परेशान हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि जिला प्रशासन को अवगत कराने के बाद भी कृष्णावती नदी में नारनौल शहर का गंदा पानी छोड़ा जा रहा है। कृष्णावती नदी राजस्थान के राजसमंद से पावन होती हुई अलवर जिले में प्रवेश करती है। उसके बाद नारनौल होती हुई सलूनी, दुबलाना, गढ़ी रूथल, गढ़ी महासर में आकर लुप्त हो जाती है। सलूनी के सरपंच राजकुमार ने बताया कि शहर की आबादी तेजी से बढ़ रही है, लेकिन शहर में उस प्रकार की सुविधा की व्यवस्था नहीं हो सकी है। यही कारण है कि नारनौल से निकलने वाला गंदा पानी सीधे तौर पर कृष्णावती नदी में छोड़ा जा रहा है। इसकी वजह से



मंडी अटेली। कृष्णावती नदी में गंदे बहते पानी को दिखाता सरपंच राजकुमार। फोटो: हरिभूमि

कृष्णावती नदी की आत्मा मर रही है। अब तो आसपास के गांव के लोग अपने पशुओं को इस नदी में पानी तक पिलाना पसंद नहीं करते हैं। उन्हें डर है कि पानी पीने के बाद उनके पशु कहीं बीमार न हो जाएं। वहीं नदी से उठती दुर्गंध लोगों को परेशान कर रही है। नदी के आसपास जिस किसी का मकान है, उनका दुर्गंध से जीना मुश्किल हो गया है। कृष्णावती नदी को जिले के ग्रामीण क्षेत्र की जीवनदायिनी के रूप में जाना जाता था। कृष्णावती नदी वर्षों में साफ जरूर कराई जाती

क्या कहते हैं एसडीओ
इस बारे में सिंचाई विभाग के एसडीओ राजेश वर्मा ने बताया कि इसकी सूचना नहीं है। कृष्णावती नदी में पिछले दिनों साफ सफाई भी करवाई थी। इसके अलावा हो सकता है किसी जोड़ड़ का ओवरफ्लो होकर नदी में गंदा पानी आ रहा हो। फिर भी हम एकबार चेक करवा लेते हैं।

है परंतु साफ करने के बाद उसे पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। गंदा पानी आने से ट्यूबवेल के पानी में से भी बदबू आने लग गई है।

एचकेआरएन पोर्टल पर डेट आफ जॉइनिंग नहीं की ठीक, सोमवार को कार्यालय घेराव की चेतावनी

हरिभूमि न्यूज ►► महेंद्रगढ़

ऑल हरियाणा पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल यूनियन के पदाधिकारियों की मीटिंग का आयोजन कार्यालय में हुआ। मीटिंग में मुख्य उद्देश्य एचकेआरएन पर लगे कर्मचारियों की डेट आफ जॉइनिंग सही करना था। इसके बारे में प्रांतीय प्रचार सचिव सुरेंद्र फौजी ने बताया कि हरियाणा सरकार के द्वारा एचकेआरएन पोर्टल खोल रखा है, जबकि महेंद्रगढ़ मंडल के अंतर्गत आने वाले तीनों उपमंडल के कर्मचारियों को डेट आफ जॉइनिंग गलत है, जिसको लेकर हमारे संगठन की 30 मई को कार्यकारी अभियंता से मीटिंग हुई थी, जिसमें कार्यकारी अभियंता ने सभी मांगें 30 जून तक पूरी करने का आश्वासन दिलाया था, लेकिन आज तक मांगें पूरी नहीं की हैं। जिससे यह जाहिर होता है कि कार्यकारी



महेंद्रगढ़। कार्यालय में मीटिंग करते कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

अभियंता कर्मचारियों की मांगें पूरी ही नहीं करना चाहता है और उसी मीटिंग में आश्वासन दिया था कि जैसे ही एचकेआरएन का पोर्टल खुलेगा डेट आफ जॉइनिंग ठीक कर दी जाएगी, लेकिन अभी 30 जून को सरकार के द्वारा पोर्टल खोल दिया गया था, लेकिन आज तक महेंद्रगढ़ के एक भी कर्मचारी की डेट आफ जॉइनिंग सही नहीं की गई है, जबकि जो

कर्मचारी 2013-14 में लगे थे उनकी डेट आफ जॉइनिंग पोर्टल पर एक जुलाई 2021 दर्शाई गई है, जबकि वह कर्मचारी जुलाई 2022 से पांच साल एक्सपीरियंस के साथ विभाग से वेतन ले रहा है। इस प्रकार की विसंगतियां होने के बावजूद भी कार्यकारी अभियंता पोर्टल पर डेट और जॉइनिंग ठीक नहीं कर रहे हैं, जिसके लिए हमारा संगठन

रे रहे नौगूद

इस मौके पर जिला प्रधान रविंद्र कुमार, जिला अध्यक्ष राजेंद्र कामरेड, वॉच अध्यक्ष रमेश बेरी, उपप्रधान सुनील पाली, सचिव कुलदीप माजरा, स्वजांची यशपाल, प्रेस प्रवक्ता नरबीर, वेदप्रकाश, रामकुमार, अजीत, नवीन, राहुल, दिनेश इत्यादि कर्मचारी उपस्थित रहे।

मौखिक रूप से कार्यकारी अभियंता से कई बार मिल चुका है और हर बार आश्वासन दिलाया गया कि जैसे ही उपमंडल से आएगा दुरुस्त कर दी जाएगी, लेकिन नौ जुलाई को उपमंडल से आ गए थे, लेकिन आज तक दुरुस्त नहीं किए गए और शनिवार शाम चार बजे कार्यकारी अभियंता कार्यालय आए, तब सभी पदाधिकारी कार्यकारी अभियंता से मिलने के लिए गए थे।

जिससे यह जाहिर होता है कि कार्यकारी

अभियंता कर्मचारियों की मांगें पूरी ही नहीं करना चाहता है और उसी मीटिंग में आश्वासन दिया था कि जैसे ही एचकेआरएन का पोर्टल खुलेगा डेट आफ जॉइनिंग ठीक कर दी जाएगी, लेकिन अभी 30 जून को सरकार के द्वारा पोर्टल खोल दिया गया था, लेकिन आज तक महेंद्रगढ़ के एक भी कर्मचारी की डेट आफ जॉइनिंग सही नहीं की गई है, जबकि जो

खेतों में पानी के भराव से पीली पड़ने लगी फसल

विक्रेताओं के स्टॉक में बीते 15 दिनों से यूरिया खाद खत्म

- यूरिया खाद के भरोसे 32 हजार एकड़ में खड़ी बाजरे की फसल का फुटाव अटका, दुकानों पर भटक रहे किसान
- पैदावार कम होने की आशंका से किसान चिंतित

हरिभूमि न्यूज ►► नांगल चौधरी

बीते एक सप्ताह से अच्छी बारिश हो रही है। अंतिम चार दिनों में 100 एमएम से अधिक पानी बरस चुका। जिससे बाजरे की सूखती फसल को राहत मिली है, लेकिन यूरिया खाद के आभाव में फुटाव रूक गया। खाद खरीदने के लिए 10 दिनों से किसान विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों पर चक्कर काट रहे हैं, लेकिन उपलब्ध नहीं होने के कारण उन्हें पैदावार घटने की चिंता सताने लगी है। समस्या से प्रशासनिक अधिकारी अवगत हैं, इसके बावजूद सप्लाई नहीं मिलने से किसानों में आक्रोश बना हुआ है। नांगल चौधरी निजामपुर के

बाजरे की फसल को सिंचाई की जरूरत नहीं

दरियाव आर्य, हंसराम, दयानंद गुंगारका, रामसिंह, दलीप कुमार, विनोद कुमार ने बताया कि पी मानसून की बारिश में बाजरे की सिंचाई होती है तथा दो महीने बरसाती सीजन में ही पककर तैयार हो जाता है। जिस कारण इस फसल को सिंचाई की जरूरत नहीं होती। समर्थन मूल्य में बाजरे के भाव अच्छे निर्धारित किए हैं। जिससे किसानों को आमदनी बढ़ाने में मदद मिलेगी। दूसरी तरफ बाजरे की फसल से मिलने वाली कड़बी से पशुचारे की आपूर्ति होती है, लेकिन यूरिया खाद के आभाव में किसानों को दोहरा लाभ देने वाली फसल बर्बाद होने की चिंता सताने लगी है।

अधिकांश गांवों में नहरी पानी की सुविधा नहीं। सिंचाई के आभाव में किसानों ने सरसों, चना, बाजरा, ग्वार इत्यादि कम पानी में पकने वाली फसलों को प्राथमिकता देनी आरंभ कर दी। खरीफ सीजन में बाजरा, ग्वार की बुवाई करते हैं, वहीं रबी सीजन में सरसों, चना, गेहूं की बुवाई करते हैं। नांगल चौधरी ब्लॉक के विभिन्न गांवों में 32 हजार एकड़ से अधिक रकबे पर बाजरे की बीजाई हुई है। अगती फसल खुदों से बाहर निकल गई, जिसे तुरंत यूरिया खाद की जरूरत है। पांच से सात दिनों में खाद का छिड़काव नहीं हुआ

सीआईए ने 101.85 ग्राम हेरोइन के साथ एक आरोपी को पकड़ा

नारनौल। पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ के नेतृत्व में जिले को नशा मुक्त करने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस की ओर से नशे पर लगातार प्रहार किया जा रहा है। नशीले पदार्थ बेचने वालों, नशा तस्करों के खिलाफ प्रभावशाली कार्रवाई की जा रही है। इसी कड़ी में सीआईए ने नशीले पदार्थ सहित एक युवक को पकड़ा है। जिसकी पहचान सुधीर वासी कोरियावास हाल आबाद किला रोड के रूप में हुई। पुलिस ने आरोपित के पास से करीब 101.85 ग्राम हेरोइन बरामद की है। आरोपित के खिलाफ थाना सदर में मामला दर्ज कर आरोपित को गिरफ्तार कर लिया गया और आरोपित से नशीले पदार्थ के बारे में पूछताछ की गई। पुलिस प्रवक्ता सुमित कुमार ने बताया कि सीआईए टीम रात के दौरान जलमहल रोड पर मौजूद थी। टीम को गुप्त सूचना मिली कि सुधीर कुमार वासी कोरियावास हाल किला रोड अपने दोस्त की गाड़ी में दिल्ली से प्रतिबंधित अवैध नशीला पदार्थ विट्टा (हेरोइन) लेकर टाणी भाटोटा, मांढी होता हुआ कोरियावास जा रहा। अगर तुरंत नाकाबंदी को जाए तो नशीले पदार्थ सहित काबू आ सकता है। सूचना के आधार पर टीम ने गांव मांढी के नजदीक नाकाबंदी की। कुछ समय बाद एक गाड़ी आती हुई दिखाई दी। जिसको रुकवाकर चालक से नाम पता पूछा तो गाड़ी चालक ने अपना नाम सुधीर कुमार बताया। जिसकी तलाशी लेने पर एक पॉलीथिन से नशीला पदार्थ हेरोइन मिला। जिसका इलेक्ट्रॉनिक कांटा पर पॉलीथिन सहित कुल वजन 101.85 ग्राम हुआ। पुलिस ने नशीले पदार्थ को जप्त कर लिया और आरोपित के खिलाफ थाना सदर में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।



नारनौल। पुलिस गिरफ्त में आरोपित।

श्रीराम यूरिया खाद की जल्द मिलेगी सप्लाई

नांगल चौधरी के ब्लॉक कृषि विकास अधिकारी डॉ. हरीश यादव ने बताया कि विक्रेताओं के स्टॉक में यूरिया नहीं है। दूसरी तरफ बाजरे में छिड़काव करना जरूरी है, उपलब्ध नहीं होने के कारण किसानों को परेशानी हो रही है। जल्द ही श्रीराम बांडेड यूरिया की सप्लाई पहुंचने की उम्मीद है। जिसका वितरण विभाग की निगरानी में कराया जाएगा। उन्होंने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि अंधाधुंध यूरिया का छिड़काव करने से फसलों को नुकसान संभव है।

मिलते ही किसानों में भगदड़ मच गई। बारिश में भीगते हुए दुकानों पर पहुंचे तथा विक्रेता से खाद मांगा, लेकिन यहां सप्लाई उपलब्ध नहीं होने पर उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा है। चिंतित किसानों ने जिला प्रशासन से तत्परता से खाद मुहैया कराने की गुहार लगाई है अन्यथा प्रदर्शन की रूपरेखा बनाई जाएगी।

खेतों में ढवा का स्प्रे कर रहे आठ किसानों पर मक्खियों का हमला

हरिभूमि न्यूज ►► कनीना

गांव केमला में शनिवार को खेतों में कार्य व ढवा की स्प्रे कर रहे आठ से 10 किसानों पर बड़ी मक्खियों ने हमला बोल दिया। जिससे चार से पांच किसानों की हालत गंभीर हो गई। जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में दाखिल करवाना पड़ा। वहीं तीन चार को दवा देकर डिस्चार्ज कर दिया गया। इस बारे में उप नागरिक अस्पताल के चिकित्सक डॉ. सुदर्लाल ने बताया कि सुबह करीब 10 बजे आपातकाल वार्ड में दिनेश कुमार बास नामक व्यक्ति गंभीर हालत में आया। जिससे अनेक मक्खियों ने काटा हुआ था। उन्होंने तत्काल उसका उपचार कर हालात को काबू किया। केमला के मिश्री दयानंद ने बताया कि वह



कनीना। उप नागरिक अस्पताल में उपचाराधीन दिनेश। फोटो: हरिभूमि

दिनेश को साथ लेकर बाजरे में स्प्रे करने के लिए गया था। वहां पर पहले से ग्रामीण खेतों में कार्य कर रहे थे। जैसे ही उन्होंने स्प्रे करना शुरू किया तो मक्खियों ने आक्रमण कर दिया। उनका शोर सुनकर खेतों में काम कर रहे व्यक्ति उन्हें बचाने के लिए आए, तो उन्हें

भी काट लिया। मक्खियों के हमले से घायल बबली, राजेंद्र, विनोद, राजपाल को गुद्दा में उपचार दिलाया। वहीं दिनेश कुमार, दयानंद आदि को उप नागरिक अस्पताल में दाखिल कराया गया। सभी व्यक्तियों की हालत में सुधार बताया जा रहा है।

पीएम नेशनल अप्रेंटिसशिप मेला कल, आएंगी कई कंपनी

नारनौल। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में 14 जुलाई को पीएम नेशनल अप्रेंटिसशिप मेला आयोजित किया जाएगा। इस संबंध में प्रधानाचार्य विनोद खनवाल ने बताया कि एसडीआईटी विभाग हरियाणा के आदेशानुसार राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नारनौल में लगने वाले इस मेला में जय भारत मारुती फरीदाबाद, हीरो मोटोकॉर्प धारुहोड़ा, निष्पॉन इलेक्ट्रिक मसानी, रेवाडी वाडी, टीआईआई बालल और राइजिंग ऑटोमेशन जैसी प्रमुख कंपनियां भाग लेंगी। इसके लिए गवर्नमेंट आईटीआई में कार्यरत प्लेसमेंट ऑफिसर सुदर्शन कुमार से संपर्क किया जा सकता है। सभी इच्छुक छात्र 14 जुलाई को सभी दस्तावेज के साथ पहुंचें। यह मेला छात्रों के लिए एक सुनहरा अवसर है जो अपने करियर की शुरुआत करना चाहते हैं और उद्योगों में अपनी प्रतिभा दिखाना चाहते हैं। इस मेले के माध्यम से, छात्र विभिन्न कंपनियों में अप्रेंटिसशिप और नौकरी के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

मेले के विवरण
तिथि: 14 जुलाई 2025
स्थान: राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नारनौल
समय: निर्धारित समय पर
मेले में भाग लेने के लिए योग्यता आईटीआई पास आउट छात्र अंतिम वर्ष में पढ़ रहे आईटीआई छात्र 10वीं और 12वीं पास छात्र जो ब्रह्मविन लाइसेंस रखते हैं (हीरो मोटोकॉर्प धारुहोड़ा के लिए), अप्रेंटिस कर चुके छात्र भी भाग ले सकते हैं
मेले में क्या होगा
कंपनियों द्वारा छात्रों का चयन किया जाएगा।
छात्रों को अप्रेंटिसशिप और नौकरी के अवसर प्रदान किए जाएंगे।

एंद्रोमेडा कैंसर अस्पताल

कैंसर की पूरी, विश्वस्तरीय जांच और इलाज

कैंसर के इलाज के लिए अब दिल्ली क्यों जाना ?

एंद्रोमेडा कैंसर हॉस्पिटल

अब CGHS और CISF, CRPF, CAPF, SSB, BSF, ITBP, NSG, Delhi Police पैनालों में शामिल

अपॉइंटमेंट एवं अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें 9138111625

एंद्रोमेडा कैंसर अस्पताल
सुरात सिटी, कुंडली, रसोई गाँव के पास, सोनीपत
www.andromedahospital.in
NABH मान्यता प्राप्त

इक्विटी फंड्स ने एसआईपी पर 27% तो लंपसम पर 23% दिया सालाना रिटर्न

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

निवेशकों की हो गई बढ़िया कमाई, लगातार बढ़ रहे निवेशक, लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर निवेश करेंगे तो हो जाएंगे मालामाल

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में हमेशा लॉन्ग टर्म के लिए पैसे लगाने की बात कही जाती है। आंकड़े भी यही बताते हैं कि इक्विटी फंड्स में 10 साल के लिए निवेश करने पर पॉजिटिव रिटर्न की पूरी संभावना रहती है, जबकि निगेटिव रिटर्न की आशंका ना के बराबर रह जाती है। यहां हम कुछ ऐसे इक्विटी फंड्स के बारे में बताएंगे, जिन्होंने पिछले 10 साल में शानदार प्रदर्शन करते हुए सबसे ज्यादा रिटर्न दिए हैं। इन इक्विटी फंड्स ने न सिर्फ लंपसम इनवेस्टमेंट पर सालाना 19 से 23 फीसदी तक फायदा कराया है, बल्कि एसआईपी करने वालों को भी 22 से 27 फीसदी तक एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न दिया है। हमने यहां सिर्फ उन्हीं फंड्स को लिया है, जिनकी वैल्यू रिटर्न की रेटिंग 4 या 5 स्टार है। 10 साल में बेस्ट रिटर्न देने वाले इक्विटी फंड यहां हम जिन इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की जानकारी दे रहे हैं, उनमें एसआईपी पर सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाली स्क्रीम में अगर किसी ने 10 साल पहले हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू की होगी, तो उनके 12 लाख के निवेश की मौजूदा फंड वैल्यू 49 लाख रुपये तक पहुंच गई होगी। इन सभी फंड्स ने एसआईपी और लंपसम दोनों में अच्छा-खासा मुनाफा दिया है। वह भी अच्छी रेटिंग के साथ।

1. निप्पोन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

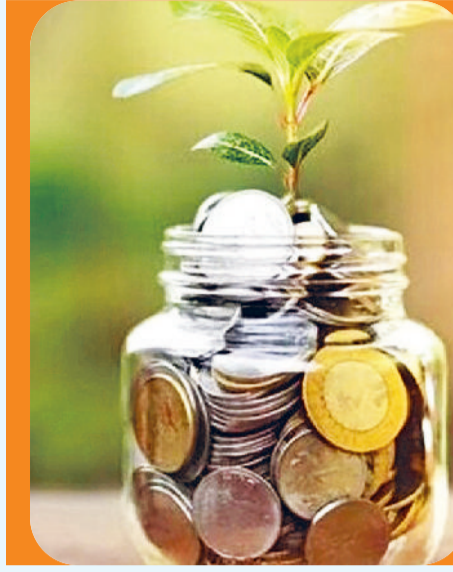
- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 5 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 22.76%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 7,77,138 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 25.02%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 44,53,987 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.64%

2. त्वांट इप्लाएसएस टैक्स सेवर फंड - डायरेक्ट प्लान

- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 21.65%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 7,09,694 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 23.59%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 41,25,214 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.51%

3. त्वांट स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 20.83%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 6,63,497 रुपये
- SIP पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 26.83%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 40,48,537 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.63%



- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 20.83%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 6,63,497 रुपये
- SIP पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 26.83%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 40,48,537 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.63%

लाख रुपये

- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 49,08,676 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.66%

4. इनवेस्टो इंडिया मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.67%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 6,02,320 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 23.24%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 40,48,537 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.63%

5. कोटक मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.45%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5,91,346 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 21.92%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 37,71,502 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.38%

6. एडलाइज्ड मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 5 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.44%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5,90,999 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 23.47%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 40,98,172 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.39%

7. एचडीएफसी मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- वैल्यू रिटर्न की रेटिंग : 5 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.03%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5,70,794 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न : 22.09%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 38,07,119 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.75%

क्या बता रहे हैं आंकड़े

10 साल में बेस्ट परफॉर्मंस देने वाले इन इक्विटी फंड्स में 4 मिडकैप फंड, 2 स्मॉल कैप फंड और एक इंप्लएसएसएफ फंड है। इन सभी के रिटर्न के आंकड़ों से एक बात तो साफ है कि अगर निवेशक सही स्क्रीम में लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करें तो काफी अच्छा मुनाफा ले सकते हैं। फिर चाहे वो लंपसम इनवेस्टमेंट हो या मंथली एसआईपी के जरिये किया गया निवेश। हालांकि म्यूचुअल फंड में पिछले रिटर्न के मविष्य में जारी रहने की गारंटी नहीं होती, लेकिन लंबी अवधि के लिए किया गया रेग्यूलर इनवेस्टमेंट आमतौर पर फायदेमंद साबित होता है, लेकिन स्टॉक्स में एक्सपोजर की वजह से इन सभी इक्विटी फंड्स को बहुत अधिक जोखिम की रेटिंग मिली हुई है। लिहाजा निवेश के बारे में कोई भी फैसला करने से पहले अपने रिस्क प्रोफाइल यानी जोखिम बर्दाश्त करने की क्षमता को जरूर ध्यान में रखें।

जितनी लंबी नौकरी, उतनी ही ज्यादा मिलेगी ग्रैच्युटी

समझदारी

बिजनेस डेस्क

अगर आप एक ही कंपनी में लंबे समय तक काम करते हैं, तो रिटायरमेंट या नौकरी छोड़ने पर कंपनी की ओर से ग्रैच्युटी के रूप में एक खास तोहफा मिलता है। ये एक तरह से लॉयल्टी या लंबे समय की सेवा का रिवाज है, जो आपकी मेहनत का इनाम है, लेकिन लोग अक्सर इसको लेकर कंफ्यूज रहते हैं कि ग्रैच्युटी रकम कब मिलती है, कितनी मिलती है और कैसे मिलती है? अगर आपकी सैलरी अंतिम सैलरी 25,000, 30,000 या 40,000 रुपये है और आपने एक ही कंपनी में 15 साल तक काम किया है, तो आपको रिवाज के रूप में कितनी ग्रैच्युटी मिलेगी? यहां दिए गए कैलकुलेशन से समझिए।

ग्रैच्युटी क्या होती है?

ग्रैच्युटी वो रकम है जो कंपनी आपको तब देती है जब आपने लगातार 5 साल या उससे ज्यादा समय तक वहां काम किया हो। ये लॉयल्टी बोनस की तरह है, जिसे पेमेंट ऑफ ग्रैच्युटी एक्ट, 1972 के तहत लागू किया गया है।

क्या कंपनी ग्रैच्युटी देने से मना कर सकती है?

यदि कंपनी 'पेमेंट ऑफ ग्रैच्युटी एक्ट, 1972' के अंतर्गत आती है, तो वह कानूनी रूप से ग्रैच्युटी देने से मना नहीं कर सकती। हालांकि, यदि कर्मचारी को अनुशासनहीनता या नैतिक अपराध के कारण बर्खास्त किया गया है, तो कंपनी ग्रैच्युटी देने से इनकार कर सकती है, जितनी लंबी नौकरी और जितना अधिक वेतन, उतनी ज्यादा ग्रैच्युटी। यह आपकी सेवा का सम्मान है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

(नोट: यह जानकारी सामान्य गणनाओं पर आधारित है। सटीक रकम जानने के लिए किसी वित्तीय सलाहकार से संपर्क करें या कंपनी के एचआर विभाग से जानकारी प्राप्त करें।)

एक कंपनी में लगातार 5 साल या उससे ज्यादा समय तक काम करने पर मिलती है ग्रैच्युटी

यह लॉयल्टी बोनस की तरह है, जिसे पेमेंट ऑफ ग्रैच्युटी एक्ट, 1972 के तहत लागू किया है

किन हालातों में मिलती है ग्रैच्युटी

- रिटायरमेंट पर
 - नौकरी छोड़ने पर (5 साल की सेवा के बाद)
 - अस्थायी या स्थायी अयोग्यता पर
 - कर्मचारी की मृत्यु की स्थिति में (लॉन्गिटीव को)
- ग्रैच्युटी के लिए कौन है एलिजिबल?**
- अगर आपने एक ही कंपनी में लगातार 5 साल काम किया है तो आप इसके हकदार हैं। मृत्यु या विकलांगता की स्थिति में 5 साल पूरे ना होने पर भी ग्रैच्युटी दी जाती है।

ग्रैच्युटी कैलकुलेशन के लिए क्या है फॉर्मूला

- ग्रैच्युटी = (15 × अंतिम वेतन × सेवा के वर्षों की संख्या) ÷ 26
 - अंतिम सैलरी = बेसिक सैलरी + डीए (महंगाई भत्ता)
- कैसे होती है ग्रैच्युटी कैलकुलेशन?**
- ग्रैच्युटी की राशि निम्नलिखित सूत्र से गणना की जाती है
 - ग्रैच्युटी = (15 × अंतिम वेतन × सेवा के वर्षों की संख्या) ÷ 26
 - यहां, अंतिम वेतन में मूल वेतन और महंगाई भत्ता (डीए) शामिल होते हैं।
 - उदाहरण के लिए अगर आपका अंतिम सैलरी 25,000 रुपये है और आपने 15 साल नौकरी की है, तो

ग्रैच्युटी मिलेगी

- ग्रैच्युटी = (15 × 25,000 × 15) ÷ 26 = 2,16,346 रुपये यानी लगभग 2.16 लाख
- इसी तरह, अगर किसी की अंतिम सैलरी 30,000 रुपये है तो ग्रैच्युटी मिलेगी
- ग्रैच्युटी = (15 × 30,000 × 15) ÷ 26 = 2,59,615 रुपये यानी लगभग 2.60 लाख
- अगर अंतिम सैलरी 40,000 है, तो ग्रैच्युटी मिलेगी
- ग्रैच्युटी = (15 × 40,000 × 15) ÷ 26 = 3,46,153 रुपये यानी लगभग 3.46 लाख

गणना में अधूरे साल का क्या होता है?

ग्रैच्युटी वो रकम है जो कंपनी अपने कर्मचारी को तब देती है जब उसने लगातार 5 साल या उससे ज्यादा समय तक उसी कंपनी में काम किया हो। ये एक तरह से लॉयल्टी या लंबे समय की सेवा का रिवाज है। खास बात ये है कि अगर आपने किसी साल 6 महीने या उससे ज्यादा काम किया है, तो उसे पूरा साल माना जाता है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि ग्रैच्युटी की गणना करते समय अगर किसी कर्मचारी ने किसी साल में 6 महीने या उससे अधिक अतिरिक्त सेवा की है, तो उस अधूरे वर्ष को भी पूरा साल माना जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपने 8 साल और 8 महीने काम किया है, तो ग्रैच्युटी कैलकुलेशन में आपकी सेवा अवधि 8 नहीं बल्कि 9 साल मानी जाएगी। यह नियम पेमेंट ऑफ ग्रैच्युटी एक्ट, 1972 के तहत लागू होता है, और इसके लिए (15 × अंतिम सैलरी × कुल सर्विस इयर) ÷ 26 का फॉर्मूला इस्तेमाल किया जाता है।

- (15 × 25,000 × 9) ÷ 26 = 1,29,807 रुपये यानी लगभग 1.30 लाख
- इसी तरह, अगर किसी की अंतिम सैलरी 30,000 रुपये है, तो
- ग्रैच्युटी = (15 × 30,000 × 9) ÷ 26 = करीब 1,55,769 रुपये
- और अगर अंतिम सैलरी 40,000 रुपये है, तो
- ग्रैच्युटी = (15 × 40,000 × 9) ÷ 26 = 2,07,692 रुपये के आसपास मिलेगी

पांच साल में 25 से 33% सालाना रिटर्न इन फ्लेक्सी कैप फंड्स ने दिखाया दम

- फ्लेक्सी कैप फंड इक्विटी फंड्स की सबसे फ्लेक्सिबल और डायवर्सिफाइड कैटेगरी
- हर तरह के मार्केट कैप यानी लाजिकैप, मिडकैप और स्मॉलकैप स्टॉक में निवेश करते

विवरण

बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों में इक्विटी फ्लेक्सी कैप फंड कैटेगरी को लेकर अट्रैक्शन लगातार बढ़ रहा है। एमकी द्वारा जारी किया गया जून 2025 का डाटा देखें तो फ्लेक्सी कैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने और इस कैटेगरी में 5,733 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह मई 2025 में 3,841 करोड़ रुपये की तुलना में 49% की बढ़त है। इस कैटेगरी में शामिल फंड भी सुपर परफॉर्म कर रहे हैं। 5 साल के दौरान 14 फ्लेक्सीकैप फंड का रिटर्न 25 फीसदी सालाना से ज्यादा रहा। वहीं, कम से कम 45 फंड ने 20 फीसदी सालाना से ज्यादा रिटर्न दिया। इससे निवेशकों के मन में इन फंडों के प्रति आकर्षण अब लगातार बढ़ता जा रहा है। निवेशक अच्छा पैसा कूट रहे हैं।

फ्लेक्सीकैप फंड में क्यों बढ़ा अट्रैक्शन

फ्लेक्सीकैप फंड कैटेगरी की बात करें तो यह इक्विटी फंड्स की सबसे फ्लेक्सिबल और डायवर्सिफाइड कैटेगरी मानी जाती है। ये फंड हर तरह के मार्केट कैप यानी लाजिकैप, मिडकैप और स्मॉलकैप स्टॉक में निवेश करते हैं। वहीं इनमें यह सुविधा भी होती है कि बाजार के माहौल के हिसाब से एक तरह के मार्केट कैप से दूसरे मार्केट कैप में निवेश शिफ्ट कर सकें, जिससे बाजार में उतार चढ़ाव का इन पर कम असर होता है। सेबी के नियमों के अनुसार, इन फंड्स को कम से कम 65% पैसा इक्विटी में लगाना जरूरी होता है, लेकिन कई बार यह 90% से ज्यादा भी होता है।

5 वर्ष : 14 फंड ने दिया 25% रिटर्न

- त्वांट फ्लेक्सीकैप फंड : 32.81%
- आईसीआईआई सीएफ डायरेक्ट प्लान इक्विटी फंड : 30.85%
- एचडीएफसी फ्लेक्सीकैप फंड : 30.11%
- एचडीएफसी फ्लेक्सीकैप फंड : 29.95%
- बैंक ऑफ इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड : 29.54%
- एचडीएफसी रिटायरमेंट सेविंग्स इक्विटी फंड : 27.89%
- आईसीआईआई सीएफ फोकस्ड इक्विटी फंड : 27.38%
- जेएम फ्लेक्सीकैप फंड : 27.24%



- फ्रैंकलिन इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड : 26.73%
- एडलाइज्ड फ्लेक्सीकैप फंड : 25.78%
- पुराना पारिख फ्लेक्सीकैप फंड : 25.72%
- फ्रैंकलिन इंडिया फोकस्ड इक्विटी फंड : 25.20%
- निप्पोन इंडिया फोकस्ड फंड : 25%
- 360 वन फोकस्ड फंड : 24.52%

पैसा रहा रिटर्न

5 साल के दौरान इस कैटेगरी की 14 स्क्रीम ऐसी हैं, जिन्होंने 25 से 33 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है। वैल्यू रिटर्न में फ्लेक्सीकैप और फोकस्ड फंड को एक ही कैटेगरी में शामिल किया है। असल में दोनों को निवेश करने की स्ट्रेटजी एक जैसी होती है। अंतर बस इतना है कि फोकस्ड फंड्स अधिकतम 30 स्टॉक्स में ही निवेश कर सकते हैं, जबकि फ्लेक्सीकैप फंड्स में ऐसी कोई लिमिट नहीं होती है।

कम से कम 3 गुना किया पैसा

5 साल में अगर कोई फंड 25 फीसदी सीएजीआर बोध दिखा रहा है, तो इसका मतलब है कि 5 साल का एक्सपोजर रिटर्न 300 फीसदी हुआ। यानी आपका 1 लाख रुपये 5 साल में 3 लाख रुपये हो गया। इसका मतलब है कि फ्लेक्सीकैप फंड की 14 स्क्रीम ऐसी हैं, जिन्होंने 5 साल में कम से कम निवेशकों का पैसा 3 गुना बढ़ाया। 30 से 33 फीसदी रिटर्न वाली स्क्रीम में 3.5 से 4 गुना पैसा बढ़ गया।

45 फंड का रिटर्न 20% से ज्यादा रिटर्न

बीते 5 साल में 14 फंड ने 25 फीसदी सालाना से ज्यादा रिटर्न दिया तो कम से कम 45 फंड ऐसे हैं, जिनमें 20 फीसदी सालाना से ज्यादा रिटर्न मिला।

यानी 20 से 25 फीसदी के बीच रिटर्न देने वाली स्क्रीम की संख्या 31 है। इसी से निवेशक अंदाजा लगा सकते हैं कि ये फंड किस तरह का प्रदर्शन कर रहे हैं। 5 साल में त्वांट फ्लेक्सीकैप फंड 32.81% एन्व्यूलाइज्ड रिटर्न के साथ टॉप पर है। एचडीएफसी फ्लेक्सीकैप फंड, बैंक ऑफ इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड, आईसीआईआई सीएफ फोकस्ड इक्विटी फंड, जेएम फ्लेक्सीकैप फंड और फ्रैंकलिन इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड भी टॉप में शामिल हैं।

क्या है फ्लेक्सीकैप फंड

फ्लेक्सीकैप फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन के शेयरों में निवेश करता है, जैसे कि लाजिकैप, मिड-कैप और स्मॉल-कैप। इसका उद्देश्य विभिन्न बाजार स्थितियों में लचीलापन प्रदान करना और पोर्टफोलियो को विविध बनाना है।

फ्लेक्सीकैप की विशेषताएं

- लचीलापन: फ्लेक्सीकैप फंड विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन के शेयरों में निवेश करता है, जिससे फंड मैनेजर को बाजार की स्थितियों के अनुसार निवेश निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिलती है।
- विविधीकरण: फ्लेक्सीकैप फंड विभिन्न सेक्टर और मार्केट कैपिटलाइजेशन के शेयरों में निवेश करता है, जिससे पोर्टफोलियो का रिस्क कम होता है।
- सक्रिय प्रबंधन: फ्लेक्सीकैप फंड का प्रबंधन सक्रिय रूप से किया जाता है, जिससे फंड मैनेजर बाजार की स्थितियों के अनुसार निवेश निर्णय ले सकते हैं।

काम की बात कोई भी कर्ज लेने से पहले ब्याज दर, शुल्क, शर्तें और इससे जुड़ी शर्तों का पता करें, ताकि बाद में आपको कोई नुकसान नहीं उठाना पड़े

पेमेंट एप से पर्सनल लोन लेना बेहद आसान है। ये ऐप कई बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ साझेदारी करता है

पेमेंट ऐप से ले रहे हैं लोन, तो जान लें इसके फायदे-नुकसान पर्सनल लोन लेना आसान है, अपनी जानकारी जरूर जुटाएं

पेमेंट एप की विशेषताएं

- डिजिटल पेमेंट : गूगल पे उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन और ऑफलाइन पेमेंट करने की अनुमति देता है।
- मोबाइल पेमेंट : गूगल पे मोबाइल डिवाइस का उपयोग करके पेमेंट करने की अनुमति देता है।
- कॉन्टैक्टलेस पेमेंट : गूगल पे कॉन्टैक्टलेस पेमेंट की अनुमति देता है, जिससे उपयोगकर्ता अपने मोबाइल डिवाइस को पेमेंट टर्मिनल के पास रखकर पेमेंट कर सकते हैं।
- सुरक्षा : गूगल पे में कई सुरक्षा विशेषताएं हैं, जैसे कि टोकनाइजेशन और बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन, जो उपयोगकर्ताओं के वित्तीय डेटा को सुरक्षित रखती हैं।

पेमेंट एप के लाभ

- सुविधा: गूगल पे पेमेंट प्रक्रिया को तेज और आसान बनाता है।
- पेमेंट करने की सुविधा प्रदान करता है।
- सुरक्षा: गूगल पे में कई सुरक्षा विशेषताएं हैं जो उपयोगकर्ताओं के वित्तीय डेटा को सुरक्षित रखती हैं।
- गति: गूगल पे पेमेंट प्रक्रिया को तेज और आसान बनाता है।
- व्यापक स्वीकृति: गूगल पे को कई ऑनलाइन और ऑफलाइन मर्चेंट्स द्वारा स्वीकार किया जाता है।
- गूगल पे एक सुविधाजनक और सुरक्षित डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म है जो उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन और ऑफलाइन पेमेंट करने की अनुमति देता है।

जानकारी

बिजनेस डेस्क

डिजिटल पेमेंट के इस दौर में गूगल पे जैसे ऐप्स ने न केवल पैसे भेजने और बिल भरने का तरीका आसान किया है, बल्कि अब ये पर्सनल लोन जैसी दूसरी सेवाएं भी दे रहे हैं। गूगल पे के जरिए पर्सनल लोन लेना कई लोगों के लिए सुविधाजनक विकल्प बन रहा है, लेकिन इसके फायदे और नुकसान दोनों हैं। इसके अलावा, कुछ छिपी हुई लागत भी हो सकती है, जिन्हें समझना जरूरी है। यहां हम गूगल पे के जरिए पर्सनल लोन लेने के अलग-अलग पहलुओं को आसान भाषा में समझने की कोशिश करेंगे, ताकि सही समय पर जरूरत के हिसाब से सही फैसला लिया जा सके।

यह करना होगा यूजर को

यूजर को गूगल पे ऐप पर लोन सेवखन में जाकर अपनी जरूरत के हिसाब से लोन राशि और अवधि चुननी होती है। आमतौर पर, लोन की मंजूरी कुछ ही मिनटों में मिल जाती है, बशर्ते आपका क्रेडिट स्कोर अच्छा हो और डॉक्यूमेंट्स पूरे हों। अभी गूगल पे 10,000 रुपये से लेकर 8 लाख रुपये तक के पर्सनल लोन ऑफर करता है, जिसकी ब्याज दरें 10.99% से शुरू होकर 36% तक जा सकती हैं। यह प्रक्रिया पूरी तरह डिजिटल है, यानी आपको बैंक की शाखा में जाने की जरूरत नहीं पड़ती। साथ ही, लोन की राशि सीधे आपके बैंक खाते में ट्रान्सफर हो जाती है, जो इसे तेज और सुविधाजनक बनाता है।

गूगल पे से लोन के नुकसान व जोखिम

हालांकि गूगल पे के जरिए लोन लेना आसान है, लेकिन इसके कुछ नुकसान भी हैं। सबसे बड़ा जोखिम है ऊंची ब्याज दरें। न्यूज वेबसाइट मनीकंट्रोल की एक रिपोर्ट के मुताबिक, कई एनबीएफसी जो गूगल पे के साथ साझेदारी करते हैं, वे अन्य बैंकों की तुलना में ज्यादा ब्याज वसूलते हैं, खासकर अगर आपका क्रेडिट स्कोर कम है। इसके अलावा, लोन की अवधि छोटी होने पर मासिक किस्त (ईएमआई) ज्यादा हो सकती है, जो आपके मासिक बजट पर दबाव डाल सकती है।



गूगल पे एक प्लेफॉर्म

एक और बात ध्यान देने वाली है कि गूगल पे खुद लोन नहीं देता, बल्कि वह एक प्लेटफॉर्म है जो आपको लेंडर्स से जोड़ता है। इसलिए, लोन के नियम और शर्तें उस वित्तीय संस्थान पर निर्भर करती हैं, जिसके साथ आप लोन ले रहे हैं। अगर आप नियम और शर्तें ठीक से नहीं पढ़ते, तो बाद में परेशानी हो सकती है।

छिपी हुई लागत और सावधानियां

गूगल पे के जरिए लोन लेते समय कुछ छिपी लागतें भी हो सकती हैं, जिन्हें अक्सर लोग अनदेखा कर देते हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, कई लोन ऑफर में प्रोसेसिंग फीस, समय से पहले भुगतान का शुल्क (प्री-पेमेंट चार्ज), और देर से भुगतान की पेनल्टी शामिल हो सकती है।

क्या है गूगल पे

गूगल पे एक डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म है जो गूगल द्वारा विकसित किया गया है। यह उपयोगकर्ताओं को अपने मोबाइल डिवाइस का उपयोग करके ऑनलाइन और ऑफलाइन पेमेंट करने की अनुमति देता है।

खबर संक्षेप

अग्निवीर सैनिकों की सेवा अवधि बढ़ाएं
नारनौल। बहुजन समाज पार्टी ने केन्द्र सरकार से अग्निवीर सैनिकों की सेवा अवधि चार साल से बढ़ाकर 15 साल करने तथा सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें एक्स सर्विस मैन का दर्जा देने की मांग की है। बसपा नेता अतरलाल ने केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को भेजे ज्ञापन में कहा है कि लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा ने अग्निवीर सैनिकों की सेवा शर्तों में सुधार करने का वादा किया था। इसलिए केन्द्र सरकार को अपना वादा पूरा करते हुए अग्निवीर सैनिकों की नौकरी अवधि चार साल से बढ़ाकर 15 साल करनी चाहिए और उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद एक्स सर्विसमैन का दर्जा देना चाहिए।

दौचाना में आएगी अटल भूजल योजना से नई क्रांति: अब हर खेत को पानी का सपना होगा साकार, कृषि भूमि की होगी सिंचाई

■ 5 एकड़ में विशाल जल संग्रहण टैंक बनकर तैयार, 307 एकड़ कृषि भूमि को होगा फायदा



नारनौल। अटल भूजल योजना के तहत बनकर तैयार जल संग्रहण टैंक।

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल
जिले के दौचाना गांव की किस्मत जल्द ही बदलने वाली है। अटल भूजल योजना के तहत निर्मित विशाल जल संग्रहण टैंक के साथ यह छोटा सा गांव अब आदर्श जल प्रबंधन मॉडल बनने की ओर अग्रसर है। राजस्थान की सीमा से सटे इस क्षेत्र में अब हर खेत को पानी का सपना साकार होने जा रहा है। यह अत्याधुनिक जल संग्रहण टैंक लगभग पांच एकड़ क्षेत्र में फैला है और 15 फीट गहरा है। इसकी क्षमता लगभग 74.29

मिलियन लीटर है तथा यह 307 एकड़ कृषि भूमि को सिंचाई सुविधा प्रदान करेगा।
लगभग 1.25 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से तैयार यह परियोजना सिर्फ पानी जमा करने का साधन नहीं बल्कि पूरे गांव की आर्थिक स्थिति में अभूतपूर्व

पाइप बिछाने का कार्य 80% पूरा

सिंचाई विभाग के एक्सीक्यूटिव संपीप नाथियर ने बताया कि खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए पाइप लाइन नेटवर्क बिछाने का कार्य भी लगभग 80 प्रतिशत पूरा हो चुका है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि चाहे खेत पास हो या दूर हर किसान को समय पर और पर्याप्त सिंचाई मिलेगी। इस योजना का उद्देश्य प्रति बूंद अधिक से अधिक फसल लेना है। यहां पर एक कंट्रोल रूम बनेगा। इस कंट्रोल रूम से अलग अलग लाइनों के लिए विशिष्ट समय के तहत पानी छोड़ा जाएगा। किसान अपने खेत में माइक्रो इरीगेशन पंपाली के जरिए सिंचाई करेंगे। उन्होंने बताया कि विभाग ने किसानों के उत्थान और कृषि विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। अटल भूजल योजना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दौचाना गांव का यह मॉडल न केवल जल संरक्षण का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करेगा, बल्कि यह भी दिखाएगा कि कैसे सुदृढ़ नीति और प्रभावी कार्यान्वयन से गांवों के क्षेत्रों को तस्वीर और तस्वीर देते बढती जा सकती है।

किसानों में खुशी

उपयुक्त डॉ. विवेक भारती ने बताया कि यह प्रोजेक्ट जिला महेन्द्रगढ़ की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए बहुत ही बेहतरीन है। इससे किसानों की खुशहाली का नया दौर शुरू होगा। अटल भूजल योजना का लक्ष्य जल संकट से जूझ रहे क्षेत्र में स्थायी भूजल प्रबंधन को बढ़ावा देना है।

सोमेटेड तली और चारों दिवारों इसे मजबूत तथा टिकाऊ बनाती हैं। सुरुआत के दृष्टिकोण चारों ओर की दीवार पर तारों की फेंसिंग की गई है।

मूर्ति स्थापना से पूर्व निकाली कलश यात्रा

महेन्द्रगढ़। सब्जी मंडी के पास स्थित प्राचीन शिव मंदिर में रविवार को सेठ गौरी दत्त खाली राम ट्रस्ट की ओर से शिव परिवार मूर्ति की स्थापना की जाएगी। इससे पूर्व शनिवार को कलश यात्रा निकाली गई, जिसमें सैकड़ों महिलाओं ने भाग लिया। इस संबंध में सेठ गौरी दत्त खाली राम ट्रस्ट के प्रधान सेठ राजकुमार, राजीव कुमार और राघव कनोडिया ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए बताया कि 13 जुलाई को ट्रस्ट की तरफ से मंदिर में शिव परिवार मूर्ति की स्थापना की जाएगी। सुबह हवन का आयोजन भी किया जाएगा।

श्याम कॉलोनी में माता की चौकी का आयोजन

नारनौल। टाईगर क्लब परिवार की ओर से श्याम कॉलोनी स्थित श्रीश्याम मंदिर समीप के पास कृष्णा के निवास पर माता की चौकी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता टाईगर क्लब परिवार के प्रधान राकेश यादव ने की। माता रानी की चौकी के मुख्य यजमान कृष्णा सपरिवार रही। कार्यक्रम संयोजक सुनील शर्मा, रवि खन्ना, कैलाश नंबरदार, ललित सैनी, प्रवीण यादव, नरेंद्र बंशी ने बताया कि माता की चौकी में सर्वप्रथम पंडित नारायण शास्त्री ने विधिमत पूजन करवाया। गणेश वंदना नरेंद्र बंशी व माता का आह्वान नवीन वशिष्ठ ने किया।

10 दिन भी बाद भी जिला प्रशासन के अधिकारियों ने नहीं ली सुध पंच सुरेंद्र की बिगड़ी तबीयत, बेटे के समर्थन में 81 वर्षीय मां देगी धरना

■ पंच सुरेंद्र सिंह के मुंह से निकला खून, स्वास्थ्य विभाग ने किया अस्पताल में किया दाखिल

■ रविवार को तबीयत खराब होने के बाद भी भूख हड़ताल कर सकते हैं पंच सुरेंद्र सिंह



महेन्द्रगढ़। पंच सुरेंद्र सिंह की स्वास्थ्य जांच करती स्वास्थ्य विभाग की टीम।

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ महेन्द्रगढ़

शहर के अंबेडकर चौक पर 10 दिन से भूख हड़ताल पर बैठे पंच सुरेंद्र सिंह की शनिवार की दोपहर को तबीयत बिगड़ गई है। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने जांच के बाद पंच सुरेंद्र को अस्पताल में भर्ती कर दिया है। वहीं बेटे के समर्थन में 81 वर्षीय मां ने भूख हड़ताल करने का निर्णय लिया है। उनका कहना है कि जब तक उनके बेटे को न्याय नहीं मिल जाता, उनकी भूख हड़ताल जारी रहेगी। यह कहकर उसकी आंखों में आंसू बहाने लगे। बता दें

10 दिन से मांगों को लेकर भूख हड़ताल

पंच सुरेंद्र 10 दिन से अपनी मांगों को लेकर भूख हड़ताल कर रहे हैं। उनके द्वारा करीब दहाई वर्ष पहले शिकायत दी गई थी। उस पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इसके अलावा उनके द्वारा दो वर्ष से लगाई गई आरटीआई का भी जवाब नहीं मिला है। 10 दिन बीत जाने के बाद जिला प्रशासन के किसी अधिकारी नहीं मौके पर पहुंचकर उनकी सुध नहीं ली है। इसके अलावा गठित की गई कमेटी भी चार दिन बीत जाने के बाद अपनी जांच रिपोर्ट नहीं पेश कर पाई है। ऐसे में जिला प्रशासन के अधिकारियों की कार्यशैली पर सवाल उठाए जा रहे हैं।

कि गांव माजरा खुर्द निवासी पंच सुरेंद्र सिंह गांव के सरपंच पर भ्रष्टाचार करने के आरोप लगाकर कार्रवाई करने की मांग को लेकर भूख हड़ताल कर रहे हैं। शनिवार की दोपहर को करीब एक बजे उनकी तबीयत खराब हो गई। सूचना के बाद मौके पर पहुंची

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने पंच सुरेंद्र सिंह की स्वास्थ्य की जांच की। इस दौरान पंच सुरेंद्र सिंह के मुंह से खून भी निकलने लगा। चिकित्सकों की सलाह पर पंच सुरेंद्र सिंह को नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर दौलत राम उर्फ झब्बू, रविंद्र प्रधान उर्फ पप्पू, पंच प्रतिनिधि वार्ड नंबर छह इंद्रजीत, विक्रम उर्फ कालिया माजरा खुर्द, दुर्धत माजरा खुर्द, रविकांत माजरा खुर्द, नवरतन माजरा खुर्द, सत्यवान माजरा खुर्द व जगदीश प्रधान कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष भारत मुक्ति मोर्चा, भूपसिंह ठाणी फोगाट, क्रांतिकारी बलवीर शर्मा, बीरबल सिंह, कृष्ण खेड़ा, बलजीत चितलांग, राजाराम सुरजनवास, अमर सिंह झूक बहुजन क्रांति मोर्चा, संतोष देवी समाजसेवी महेन्द्रगढ़, कंवर सिंह रंगा निंबी, रमेश जोनावास, अमर सिंह राठौड़ झूक, रघुनाथ सिंह सिसोठ, महावीर प्रसाद महेन्द्रगढ़ व धीरज यादव माजरा खुर्द आदि मौजूद रहे।

एकलव्य के रोहित तंवर को गोल्ड बंटी व संजय को मिला ब्रॉन्ज मेडल

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

हरियाणा रायफल एसोसिएशन की ओर से आयोजित 10वीं हरियाणा राज्य शूटिंग प्रतियोगिता में एकलव्य के शूटर्स ने तीन मेडल जीते हैं। एकेडमी के सचिव सुरेश चौहान एडवोकेट ने बताया कि यह प्रतियोगिता एक जुलाई से 10 जुलाई तक दिल्ली की डॉ. करनो सिंह शूटिंग रेंज में आयोजित हुई। जिसमें एकेडमी के शूटर रोहित तंवर उर्जावे ने 10 मीटर एयर पिस्टल में गोल्ड मेडल जीता, बंटी शेखपुरा ने 50 मीटर फ्री पिस्टल इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीता व शेखपुरा के संजय कुमार सैनी ने भी पेटा रायफल में ब्रॉन्ज मेडल जीता है। गोल्ड चंद जेई पांचवें स्थान पर रहे। इनके साथ 10 मीटर एयर पिस्टल में एकेडमी की



नारनौल। एकलव्य एकेडमी के खिलाड़ी।

फोटो: हरिभूमि

महिला शूटर खुशी कुंजपुरा, मनस्वी शर्मा अमरपुरा, भारती अकबरपुर व निशु ने अपने अपने इवेंट में शानदार प्रदर्शन किया। पुरुष वर्ग 10 मीटर एयर पिस्टल में हरीश बालरपुर, पुलकित नारनौल, मयंक सेका, मयंक कुमार राजपत नारनौल, हेमेश सिंह प्रजापत हमीदपुर, मेहुल चौहान खोड़, रवि व अभिषेक

गर्भवती महिलाएं 10 सप्ताह से पहले करवाए रजिस्ट्रेशन: डॉ. जीत शर्मा

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ महेन्द्रगढ़

गांव देवास के उप स्वास्थ्य केंद्र में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ को लेकर एक जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता सरपंच मंजीता यादव ने की और बैठक का संचालन सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. हिमांशु ने किया। बैठक में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मालडा बांस के चिकित्सा अधिकारी डॉ. जीत शर्मा, एडवोकेट सुमन देवी, स्वास्थ्यकर्मी मुकेश चौहान विशेष रूप से उपस्थित रहे। सीएचओ डॉ. हिमांशु ने बताया कि आज लड़कियां



महेन्द्रगढ़। महिलाओं को जागरूक करते स्वास्थ्यकर्मी।

लड़कों से हर क्षेत्र में आगे है। डॉ. जीत शर्मा ने बताया कि गर्भवती महिलाओं को 10 सप्ताह से पहले उप स्वास्थ्य केंद्र में अपना रजिस्ट्रेशन करवाकर अपने रक्त की जांच करवानी चाहिए।

नारनौल, महेन्द्रगढ़ व कनीना में राष्ट्रीय लोक अदालत कुल 13397 केस निपटारे के लिए रखे गए, 8950 का हुआ फैसला

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से जारी दिशा निर्देशानुसार व जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष नरेंद्र सूर्या के मार्गदर्शन व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी की देखरेख में शनिवार को न्यायिक परिसर नारनौल, महेन्द्रगढ़ व कनीना में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया।

इस लोक अदालत में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश कंवरपाल सिंह, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश हर्षाली चौधरी, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश वर्णा जैन, सिविल जज सीनियर डिवीजन जतिन गुजराल व सिविल



नारनौल। लोक अदालत में केसों का निपटारा करते न्यायाधीश। फोटो: हरिभूमि

जज जूनियर डिवीजन कोपल चौधरी ने नारनौल, अतिरिक्त सिविल जज सीनियर डिवीजन प्रवीण कुमार कनीना तथा महेन्द्रगढ़ में सिविल जूनियर डिवीजन रितु तंवर न्यायाधीशों की बच्चों की ओर से फैसले किए गए।

इस लोक अदालत में कुल 13397 केस निपटारे के लिए रखे गए। जिनमें से 8950 केसों का फैसला किया गया। इसमें 19 मोटर वाहन दुर्घटना से सम्बन्धित मामले जिनमें कुल एक करोड़ 32 लाख 70 हजार रुपये का मुआवजा दिया गया। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से एक हेल्पलाइन नंबर 01282250322 चलाया हुआ है। जिस पर भी आमजन किसी भी प्रकार की कानूनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।



मंडी अटेली। शराब के टैके विरोध में प्रदर्शन करते हुए।

फोटो: हरिभूमि

धन्नोंदा रोड पर रिहायशी क्षेत्र में शराब का ठेका खोलने के छठे दिन भी धरना और प्रदर्शन जारी

मंडी अटेली। करुबे के धन्नोंदा रोड पर वार्ड तीन-चार के रिहायशी क्षेत्र में शराब का ठेका स्थापित करने के विरोध में वार्ड व रोड करुबे के नागरिकों का धरना-प्रदर्शन शनिवार को छठे दिन भी जारी रहा। धरना स्थल पर महिलाओं ने ठेका विरोधी नारों के अलावा गीत गाकर अपना विरोध जताया। प्रदेश सरकार भेषे से दूर रहने की बात कर रही है, लेकिन इस ठेके से सरकार की गंभीर पर सवाल उठ रहे हैं। नगर पालिका अध्यक्ष संजय गोयल ने स्थानीय नागरिक धरना स्थल पर बैठे रहे। ठेके को हटाने की मांग को लेकर पहले मंत्री आरती सिंह राव के कार्यालय तक प्रदर्शन किया गया था। वहीं ज्ञापन भी सौंपा गया था। इसके बावजूद ठेका नहीं हटाया गया। धरना स्थल के संचालक वेदप्रकाश गिरदावर ने बताया कि ठेके के पास हनुमान मंदिर और अस्पताल हैं। यहीं से रातकोय महाविद्यालय जाने का एकमात्र रास्ता गुजरता है। ठेका खोलने से महिलाओं और बच्चों को परेशानी हो रही है। इलाके में डर का माहौल फैल गया है। स्थानीय महिलाओं ने बताया कि पहले वह सुबह और शाम टहलने जाती थीं। अब ठेके के डर से टहलना भी छोड़ दिया है। अगर ठेका नहीं हटा तो इस रास्ते से गुजरना भी बंद कर देंगी। महिलाओं और बच्चों के गतिविधि के लिए यह ठेका खतरा बन गया है। प्रदर्शन में नगर पालिका चेयरमैन संजय गोयल, पार्षद प्रेमलता, अनिल गुप्ता, स्नेहलता, अशोक जांगिड़, मुकेश जांगिड़, राकेश सैनी, मनोष वाल्मीकि, डॉ. राजेंद्र गौड़, वेद पटवारी, सतवीर रियायत प्रजाय, प्रवक्ता रामेश्वर सहित कई लोग शामिल रहे।

हरिद्वार के लिए परिवहन सुविधा नहीं होने के चलते श्रद्धालु परेशान, 3 जिलों से जाती हैं केवल 2 बसें महेंद्रगढ़ और नारनौल रेलवे स्टेशन से नहीं मिलती सीधी ट्रेन

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ महेन्द्रगढ़

जिला से हरिद्वार के लिए परिवहन सुविधा नहीं होने के कारण श्रद्धालु नहीं होने के कारण भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। आसपास के तीन जिलों से केवल दो बस बसें का संचालन होता है। नारनौल डिपो द्वारा एक भी बस का संचालन नहीं किया जा रहा है। जिला के श्रद्धालु हरिद्वार जाने के लिए दूसरे जिले पर आश्रित है। श्रद्धालु द्वारा हरिद्वार के लिए स्पेशल बस चलाने की मांग की जा रही है। बता दें कि प्रदेश के लोग भारी



महेन्द्रगढ़। बस स्टैंड महेन्द्रगढ़।

फोटो: हरिभूमि

संख्या हरिद्वार जाकर में श्रावण में जाकर स्नान करते हैं तथा कावड़ लाने की भी प्रथा है। करीब एक माह तक स्नान चलता है। इस दौरान

जिले के लोग भारी संख्या में एक माह तक हरिद्वार जाकर स्नान करके आते हैं तथा यहां रवाना होकर हरिद्वार से कावड़ लेकर आते हैं।

ट्रेन यात्रियों को नहीं मिल रहा लान

महेन्द्रगढ़ और नारनौल रेलवे स्टेशन से हरिद्वार के लिए कोई सीधी रेलसेवा नहीं है। यहां के श्रद्धालुओं को रेल में सफर करने के लिए रेवाड़ी स्टेशन पर जाना पड़ता है। रेवाड़ी स्टेशन से भी हरिद्वार के लिए केवल दो ट्रेन जाती हैं। रेवाड़ी से हरिद्वार जाने वाली योगा एक्सप्रेस रेवाड़ी से रात को 2.55 बजे रवाना होती है। ऐसे में यहां के श्रद्धालुओं को पूरी रात स्टेशन पर खिन्नाई पड़ती है। इसके अलावा उत्तरांचल एक्सप्रेस सुबह जल्दी रेवाड़ी से रवाना होती है। ऐसे यहां के श्रद्धालुओं को यह ट्रेन पकड़ने के लिए सुबह जल्दी रवाना होना पड़ता है।

श्रद्धालु ने परिवहन विभाग से श्रावण माह में हरिद्वार के लिए स्पेशल बस चलाने की मांग की है। उनका कहना है कि इससे परिवहन विभाग के राजस्व में बढ़ोतरी होगी।

152 डी होते हुए बस का हो संचालन

नारनौल डिपो की ओर से 152 डी होते हुए सुबह के समय रोडवेज बस का संचालन करना चाहिए। यह बस नारनौल से रवाना होकर महेन्द्रगढ़, वाया बुचावास कट, दादरी, रोहतक, पानीपत, शामली, सहारनपुर, रुड़की होते हुए हरिद्वार तक चलाई जाए। इस बस का संचालन होने के बाद नांगल चौधरी व अटेली क्षेत्र के लोग नारनौल पहुंचकर हरिद्वार जा सकते हैं। इस बस का सतनाली, महेन्द्रगढ़ व कनीना के लोगों को भी पूरा लाभ मिलेगा। इसके अलावा 152 डी से दादरी, झज्जर, रोहतक व पानीपत जिला के श्रद्धालुओं को भी सीधा लाभ मिलेगा।

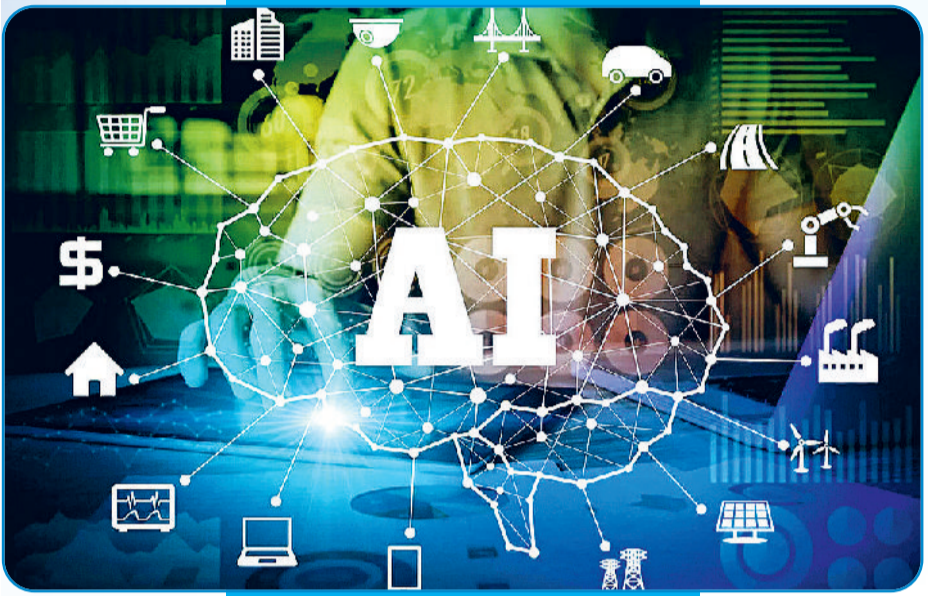
कावड़ लेकर आते हैं। वहीं करीब 11 से 12 हजार लोग करने के लिए जाते हैं। ऐसे में इन श्रद्धालु को परिवहन सुविधा नहीं होने के कारण भारी परेशानी उठानी पड़ती है।

रैली निकालकर डेंगू व मलेरिया से किया जागरूक

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव गणियार में मलेरिया एवं डेंगू से लोगों को जागरूक करने के लिए रैली निकाली गई। रैली का नेतृत्व कर रही एमपीएचडब्ल्यू हरीश यादव ने बताया कि घर में व आसपास कहीं भी खुले में पानी को इकट्ठा नहीं नहीं रहने दें। कुत्तर के पानी को सप्ताह में कम से कम एकबार जरूर बदलें। इस बीच इसमें मच्छर रोधी दवाओं का छिड़काव हर हाल में होना चाहिए। घर में सोने के दौरान मच्छरदानी का प्रयोग करें। बच्चों को पूरी बाजू के कपड़े का प्रयोग करें। इस रैली में 50 से अधिक बच्चों एवं आशा वर्कर पुष्पा देवी, प्रियंका, नीलम देवी आदि ने भाग लिया।

एआई अब केवल विशिष्ट ही नहीं लगभग हर क्षेत्र में अपनी पैठ बढ़ा रहा है। लेकिन इसके पॉजिटिव के बजाय मिसयूज होने की आशंका से पूरी दुनिया के लोग चिंतित हैं। यही वजह है कि एआई यूज करने को लेकर कुछ ग्लोबल रूल्स-रेग्यूलेशंस डिजाइड करने के उद्देश्य से जापान में सम्मेलन होने जा रहा है। इस सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य और चुनौतियों पर एक नजर।

अब जल्द डिजाइड होंगे एआई यूज करने के रूल्स



स्पष्टीकरण इत्यादि की भी केंद्रीय चर्चा होगी। सबसे ज्यादा इस बात पर जोर दिया जाएगा कि इंसानी समाज के नजदीकी नैतिक मुद्दों के साथ-साथ भविष्य की चिंताओं जैसे मानव-समान बुद्धिमत्ता और चेतना जैसी जटिल स्थितियों भी विचार में रहेंगे। अगर यह कहा जाए कि अंततः यह सम्मेलन एआई के इस्तेमाल की निर्णायक दिशा तय करेगा या उस दिशा की ओर आगे बढ़ेगा, तो गलत नहीं होगा।

कुछ नियम होंगे निर्धारित

यह जरूरी नहीं है कि इस सम्मेलन के बाद एआई से संबंधित कोई वैश्विक नियम लागू हो ही जाए कि एआई का इस्तेमाल इस नियम के तहत किया जाएगा। हो सकता है अभी यहां तक बात न पहुंचे, लेकिन इस सम्मेलन से यह तय होगा कि एआई किन क्षेत्रों को प्रोत्साहित करेगी। मसलन

कवर स्टोरी लोकमित्र गौतम

आगामी 27 से 29 जुलाई 2025 तक टोक्यो (जापान) में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) को लेकर तीन दिवसीय सम्मेलन होने जा रहा है। उम्मीद की जा रही है कि इस सम्मेलन में मानव समाज के लिए एआई के इस्तेमाल की निर्णायक दिशा तय होगी।

पहले मी होते रहे हैं प्रयास

साल 2010 से ही पश्चिमी दुनिया में एआई के मानव जीवन में इस्तेमाल को लेकर जबर्दस्त नैतिक दुविधा का वातावरण रहा है। इसलिए



इन मुद्दों पर होगी चर्चा

वास्तव में यह सम्मेलन मानव केंद्रित एआई सिद्धांतों की समीक्षा करेगा- मसलन वैश्विक एआई नीति ढांचों में गहराई से विचार-विमर्श किया जाएगा, ताकि मानव गरिमा, विविधता, समावेश और पारदर्शिता मुख्य मुद्दों के रूप में गहन विचार-विमर्श के केंद्र में रहे। यूरोप, जापान, ओईसीडी तथा जी-7 जैसे संगठनों के बीच विचारों के आदान-प्रदान पर जोर होगा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि एआई वैश्विक रूप से अनुकूल और एकीकृत दिशा ले सके। इस सम्मेलन में सिर्फ सिद्धांतों तक बात सीमित नहीं रहेगी बल्कि तकनीकी सुरक्षा पर भी फोकस होगा। तकनीकी जोखिम जैसे बायस, एलाइनमेंट, आउटपुट के

स्वास्थ्य, शिक्षा, सतत विकास, जैसे मानव हितैषी क्षेत्रों में एआई का किस तरह ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक इस्तेमाल करके मानव समाज को बेहतर बनाया जाए। इस सम्मेलन में यह भी तय होगा कि एआई का उपयोग हथियारों को घातक बनाने, इंसान की सूक्ष्म निगरानी करने या उसके विरुद्ध अमानवीय प्रयोगों में न

कई वजहों से महत्वपूर्ण होगा यह सम्मेलन

अगर कहा जाए कि होने वाला यह सम्मेलन मानव समाज के लिए अंततः एआई के इस्तेमाल की दिशा तय करेगा, इसके लिए कानून मले न बनाए, लेकिन नीति, प्राथमिकता और नैतिक दिशा तय करेगा, तो गलत नहीं होगा। वास्तव में यह सम्मेलन इसीलिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें नीति और नवाचार के बीच सेतु बनाया जाएगा। इस सम्मेलन में एआई को लेकर जारी वैश्विक दिशा में जापान की अपनी भागीदारी बढ़ेगी। तकनीकी संरक्षण और नैतिक शासन के दृष्टिकोण से जापान को भी केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए अवसर इस सम्मेलन के जरिए हासिल होगा। साथ ही इस सम्मेलन में स्वतंत्र अनुसंधानों और नए स्टार्टअपों को दृष्टि साझी होगी। मतलब यह कि यह सम्मेलन सिर्फ सरकार या तकनीकी विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि जनता, शिक्षाविद और नागरिक समाज के प्रतिनिधि भी इस सम्मेलन के जरिए इसमें निर्णायक हस्तक्षेप करेंगे।



किया जाए। इसके लिए सिर्फ रोक-टोक भर काफी नहीं होगी बल्कि स्पष्ट रूप से नियम बनाए जाएंगे और कड़े नैतिक सवाल को उन्हे घेरा जाएगा।

एआई विकास की दिशा तय होगी

सवाल है आखिर किन मूल्यों के आधार पर भविष्य में एआई का विकास हो और उसके इस्तेमाल की दिशा तय हो? सुनिश्चित रूप से अभी तक इस सम्मेलन की जो विमर्शगत थीम तैयार हुई है, उसके मुताबिक इस सम्मेलन में एआई की पारदर्शिता, उसकी जवाबदेही, मानव गरिमा और अधिकारों का सम्मान तथा विविधता व समावेशिता के नियमों पर कड़ाई से एआई को खरा उतरना पड़ेगा। इस बात पर पूरी दुनिया के बीच एक निर्णायक समझ बनेगी। यह सम्मेलन एआई तकनीकी विकास की भी दिशा तय करेगा। मसलन, ऐसी तकनीकी विकसित होगी, जिसका उद्देश्य मानव समाज के व्यापक हित में हो और जिसके विकास का निर्णय समझाया जा सके। इस सम्मेलन में बायस फ्री एआई यानी

ऐसी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रति सहमति बनेगी, जिसमें पहले से कोई पूर्वग्रह न हो और हां, अंतिम रूप से यह तय किया जाएगा कि एआई का अंतिम नियंत्रण मनुष्य के हाथ में रहे, एआई के हाथ में मनुष्य का नियंत्रण न जाए। यह सम्मेलन विभिन्न देशों, विभिन्न टेकनो कंपनियों और समाज के बीच क्या सही है, क्या गलत है, इस पर अंतिम रूप से अपनी निर्णायक

सोच विकसित करेगा ताकि भविष्य में एआई का इस्तेमाल बेतरतीब न हो बल्कि यह नैतिक और जिम्मेदारी के नियंत्रण में रहे। कुल मिलाकर यह सम्मेलन मानव केंद्रित एआई विकास, वैश्विक नैतिक दिशा निर्देश, तकनीकी सुरक्षा और एआई को लेकर एक दीर्घकालिक समझ को विकसित करेगा। *

{ फ्यूचर प्लानिंग / शेलेट सिंह }

बहुत जल्द अंतरिक्ष में होगा इंडियन स्पेस स्टेशन

फिलहाल आईएसएस और चीन के स्पेस स्टेशन अंतरिक्ष में एक्टिव हैं। इनके अलावा जल्द ही भारत का अपना स्पेस स्टेशन भी स्पेस में पहुंच जाएगा। इसकी प्लानिंग और खासियतों पर एक नजर।

अब से दो वर्ष पहले

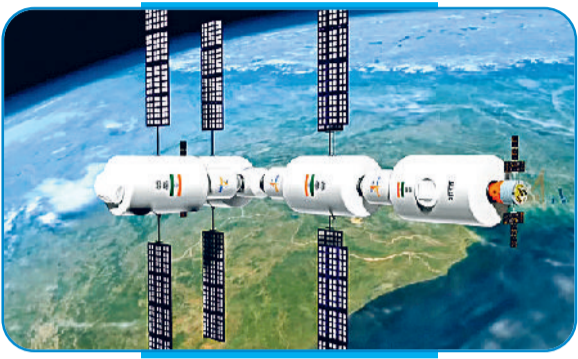
23 अगस्त 2023 को जब भारत, चंद्रयान-3 को चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने वाला दुनिया का पहला देश बना था, उसके पहले किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि भारत जैसा देश भी आने वाले एक दशक के भीतर स्पेस में अपना अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की भी घोषणा कर सकता है। लेकिन जब हम चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने में सफल हुए, उसके बाद यह घोषणा की थी। अब किसी को इस बारे में आशंका नहीं रह गई है कि निकट भविष्य में भारत, अंतरिक्ष में अपना स्पेस स्टेशन बना लेगा।

तीन साल बाद होगा लांच

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने साल 2028 तक भारत का पहला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन लांच करने का ऐलान किया है। उसके मुताबिक 2028 में लांच होने वाला मांड्यूल एक रोबोटिक मांड्यूल होगा यानी, एक ऐसा उपग्रह जहां हम डॉक कर सकते हैं, प्रयोग कर सकते हैं और वापस आ सकते हैं। लेकिन इसका अंतरिक्ष स्टेशन पर जाना साल 2035 के बाद ही संभव होगा।

कुछ ऐसा था पहला आईएसएस

अंतरिक्ष (एसएस) पृथ्वी की निचली कक्षा में एक मांड्यूलर स्पेस स्टेशन या रहने योग्य कृत्रिम उपग्रह होता है। दुनिया का पहला अंतरिक्ष स्टेशन साल्युट 1 था, जिसे तत्कालीन सोवियत संघ (अब मुख्य तौर पर रूस) ने 19 अप्रैल 1971 को कजाकिस्तान के बायकोनूर कॉस्मोड्रोम से लांच किया था। यह अंतरिक्ष स्टेशन करीब 20 टन वजन की और बेलनाकार था। इसकी लंबाई 12 मीटर और चौड़ाई 4.25 मीटर थी। सिंगल डॉकिंग पोर्ट वाला यह स्टेशन, तीन कार्यशील खंडों में विभाजित था। इसके भेजने को मुझ मकसद लंबी अवधि की अंतरिक्ष यात्रा में इंसान के शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना और अंतरिक्ष से पृथ्वी की निरंतर तस्वीरें लेना था।



दुनिया का पहला एसएस साल्युट-1



दुनिया का पहला एसएस साल्युट-1

अंतरिक्ष स्टेशन में 3,884 क्यूबिक फुट या 110 क्यूबिक मीटर के दो मांड्यूल हैं। चीन का अंतरिक्ष स्टेशन, नासा के नेतृत्व वाले इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन से छोटा है। यह पृथ्वी से 450 किमी तक कक्षीय ऊंचाई पर काम करता है। ऐसा होगा इंडियन स्पेस स्टेशन: इसरो ने अपनी इस महत्वाकांक्षा का खुलासा साल 2019 में ही कर दिया था और तब ही ऐलान भी किया था कि अगले 20 से 25 सालों में भारत का अंतरिक्ष में अपना बेस होगा। कहने का मतलब यह कि अंतरिक्ष स्टेशन इसरो के फ्यूचर प्लान में काफी पहले से शामिल रहा है। इसरो के मुताबिक प्रस्तावित अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मांड्यूल का वजन 8 टन होगा, जिसका वजन बाद में 20 टन का भी हो सकता है। इसमें एक साथ 4 से 5 एस्ट्रोनाट्स रह सकेंगे और इसे पृथ्वी की सबसे निचली कक्षा में रखा जाएगा, जिसे एलईओ (लोअर अर्थ ऑर्बिट) कहते हैं और यह धरती से 400 किलोमीटर दूर स्थित है। भारत अपने गणनात्मक मिशन को भी पृथ्वी के लोअर ऑर्बिट में ही भेजने वाला है, वहीं पर इसरो का अपना स्पेस सेंटर भी स्थापित होगा। भारत सरकार ने इसके लिए जरूरी फंड कई साल पहले जारी कर दिया था। *

{ लघुकथा / गीता सिंह }

बांझिन का घर

सुजाता अपने सास-ससुर के लिए चाय-नाश्ता बना रही थी, जो बस थोड़ी देर पहले ही आरा से पटना आए थे। सुजाता के सास-ससुर अपनी पोती से मिलने के लिए अक्सर आरा से पटना आ जाया करते थे। बेटे की शादी के काफी सालों बाद उन्हें दादा-दादी बनने का सौभाग्य जो प्राप्त हुआ था। रविवार को छुट्टी थी। सुजाता का पति समीर आज घर पर ही था। वह सोफे पर बैठा हुआ टीवी देख रहा था। पास ही तीन साल की बेटे बिट्टो भी अपने खिलौनों से खेल रही थी। बीच-बीच में वह अपने पापा से टीवी पर कार्टून चैनल लगाने की जिद भी करती, लेकिन समीर बिट्टो को झिड़क देता। बच्ची डरकर शांत बैठ जाती या रोते हुए अपनी मम्मी के पास कायात लेकर पहुंच जाती। सुजाता, बेटे को कभी प्यार तो कभी गुस्से से समझाकर वापस खेलने के लिए भेज देती। तभी सुजाता ने समीर को आवाज लगाई, 'चाय-नाश्ता तैयार हो गया है। टीवी बंद कर मम्मी-पापा के कमरे में चले जाइए। आप भी वहीं बैठकर उनके साथ नाश्ता कर लीजिए।' समीर अनमन मन से टीवी बंद करके दूसरे कमरे में मम्मी-पापा के पास चला

गजल अवतार सिंह अक्षरजीवी

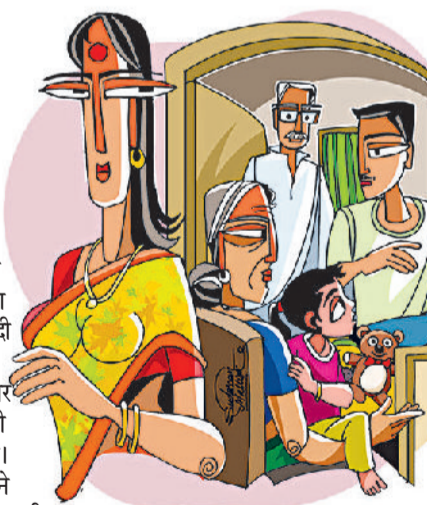
सच बोलने वाले

सच बोलने के खतरे बहुत हैं सच बोलने वाले मरते बहुत हैं सब जानते हैं फिर भी सच कहते हैं कम, उरते बहुत हैं न देखा न सुना जाता है ये होव्वा है इससे छुपते बहुत हैं गिर गया तो उठाता नहीं कोई सच से लोग रिकविचाते बहुत हैं ठसकों में कमी छुपाते हैं लोग सच करने वाले पे हंसते बहुत हैं सच बोलने वाले गिनती के हैं बस झूठ पर जीने वाले मिलते बहुत हैं

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान मूषण }

आत्मीय ऊष्मा से भीगे संस्मरण

कवयित्री और कथाकार आरती 'आस्था' के द्वारा लिखे गए दस संस्मरणों की किताब 'उनसे मिले जैसे जिंदगी से मिले' हाल में छपकर आई है। इनमें एक तरफ जहां उनके निजी जीवन की छवियां उजागर होती हैं, वहीं आज के संवेदनहीन होते जा रहे समय में भावनात्मक संबंधों की अत्यंत सघन अनुभूतियां, मन को आश्चर्य



बरसों से करीने से सजे साफ-सुथरे घर रखने पर तब जो तारीफ सुजाता को दूसरों से मिला करती थी, सासू मां मौजूद होने पर थोड़ा मुस्कुराते हुए हमेशा यही बात बोला करती थीं, 'घर तो साफ रहेगा ही...'

सासू मां इतना बोलकर चुप हो जाती थीं। सुजाता को तब लगता कि शायद सासू मां उसकी तारीफ में ऐसा बोला करती हैं। ...लेकिन आज उन्होंने पूरी बात बोलकर, उन शब्दों के अर्थ अनजाने में ही सुजाता के सामने प्रकट कर दिए थे- 'घर तो साफ रहेगा ही... बांझिन का घर जो ठहरा...'

पिरोया है। इनके अलावा कुछ ऐसे स्नेही स्वजनों के प्रति भी उन्होंने शाब्दिक कृतज्ञता अर्पित की है, जिन्होंने जीवन के कठिन समय में उन्हें संबल दिया। शिल्पगत कठिन समय में उन्हें संबल दिया। शिल्पगत कृतज्ञता से मुक्त, सहज भाषा में लिखे गए ये संस्मरण मन में ठहर

गया। कमरे में घुसते ही वहां का हाल देखकर झल्लाते हुए बोला, 'बिट्टो तो घर में कोई सामान जगह पर नहीं रहने देती। सब सामान इधर-उधर फैलाती रहती है। बेटा का हाल तो देखो जरा, कितनी बुरी हालत हो रही है। उफफ! बेटाशरीर पर इतनी सिलवटें हैं, कितनी गंदी हो गई है। कभी घर साफ ही नहीं रहता!'

इस बात पर सुजाता कुछ बोलती, उससे पहले उसकी सासू मां बोल पड़ीं, 'अरे, बच्चे वाला घर है, किसी बांझ-बांझिन का घर थोड़ी न है, जो हरदम साफ रहेगा।' उन्होंने ऐसा बोलकर अपने बेटे को तो शांत कर दिया, किंतु सुजाता के भीतर घोर अशांति फैला दी। उसका मन अशांत होता भी क्यों नहीं? आखिर सुजाता के मन-मस्तिष्क पर जमे कुछ शब्दों के अर्थ आज सामने जो थे।

जाते हैं। वास्तव में इमानदारी और सहजता ही इन संस्मरणों का सौंदर्य है, जो पारंपरिक संस्मरण विधा की बनी-बनाई परिधि से इतर इन संस्मरणों को अलग पहचान प्रदान करता है। प्रख्यात साहित्यकार यश मालवीय ने पुस्तक की भूमिका में उचित ही लिखा है, 'पृष्ठ-पृष्ठ पर जैसे यादों का लोहबान जल रहा है। आत्मीय ऊष्मा से नहा गया है मन।' *

{ इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार }

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा चालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ-

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैनालिसिस, पैलाप्लोजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में कठिनाई, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इन्फ्लूएंजा फैलियर जैसे जो कॉम्प्लिकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडिक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फेसिट जॉइंट सिंड्रोम, माइग्लोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पाइलोलिथिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है?
हां, यह एक प्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह विकल्प है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

एक डिस्क लेवल के ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?
स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक कठिनाई उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक प्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन

देहली हॉस्पिटल, ओल्ड श्री टॉकीज, वारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
सम्पर्क - 7354858466

व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
www.nonsurgicalspinecentre.in



भारत वर्ष तीर्थों की पवित्र भूमि है। इस धरा पर ऐसा कोई प्रांत नहीं, जहाँ तीर्थस्थल न हों। ये तीर्थस्थल दीर्घकाल से आस्था एवं विश्वास के प्रमुख केंद्र रहे हैं। सनातन धर्मावलंबियों के लिए कश्मीर प्रांत में स्थित अमरनाथ नामक तीर्थस्थल का विशेष महत्व है। कहलण की 'राजतरंगिणी' में इस तीर्थ को 'अमरेश्वर' कहा गया है। अमरनाथ हिंदी के दो शब्द 'अमर' अर्थात् 'अनश्वर' और 'नाथ' अर्थात् 'भगवान' को जोड़कर बनाता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों- सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, अंकारेश्वर, केदारनाथ, भीमाशंकर, काशी विश्वनाथ, वैद्यनाथ, त्र्यंबकेश्वर, रामेश्वर, नागेश्वर और घुणेश्वर के अतिरिक्त अमरनाथ का भी विशेष महत्व है। शिव के प्रमुख स्थलों में अमरनाथ अत्यंत है। इसीलिए अमरनाथ को तीर्थों का तीर्थ कहा जाता है। मृत्यु को जीतने वाले मृत्युंजय शिव अमर हैं, इसीलिए अमरेश्वर भी कहलाते हैं। श्रद्धालु अमरेश्वर को ही बाबा अमरनाथ और बार्फानी-बाबा भी कहते हैं। अमरनाथ तीर्थस्थल जम्मू-कश्मीर राज्य के श्रीनगर शहर के उत्तर-पूर्व में 141 किलोमीटर दूर समुद्र तल से 3,888 मीटर (12756 फुट) की ऊंचाई पर स्थित है। इस गुफा की लंबाई (भीतर की ओर गहराई) 19 मीटर और चौड़ाई 16 मीटर है। 40 मीटर ऊंची अमरनाथ गुफा में पानी की बूंदों के जम जाने की वजह से ठोस बर्फ का एक अप्रतिम-देवीय शिवलिंग निर्मित होता है।

आध्यात्मिक आनंद-अक्षय पुण्य प्रदान करती है अमरनाथ यात्रा

को अमरत्व का रहस्य बताया था। **पौराणिक और ऐतिहासिक महत्ता:** इतिहासकारों का मानना है कि अमरनाथ यात्रा, हजारों वर्षों से चली आ रही है। अमरनाथ-दर्शन का महत्त्व पुराणों में भी मिलता है। बृंगेश संहिता, नीलमत पुराण, कलहण की राजतरंगिणी आदि में इस तीर्थ का उल्लेख मिलता है। नीलमत पुराण में अमरेश्वर के बारे में दिए गए उल्लेख से पता चलता है



कि इस तीर्थ के बारे में छठी-सातवीं शताब्दी में भी लोगों को जानकारी थी। स्वामी विवेकानंद ने 1898 में जब अमरनाथ गुफा की यात्रा की तो भावविभोर होकर कहा था, 'मुझे सचमुच लगा कि स्वयं शिव के दर्शन हो गए हैं। मैंने ऐसी सुंदर प्रतिमा कभी नहीं देखी और न ही किसी धार्मिक-स्थल की यात्रा का इतना आनंद आया।'

यात्रा के दूरे दो मार्ग: अमरनाथ की गुफा तक पहुंचने के लिए सामान्यतः दो मार्ग हैं। प्रथम पहलगांम मार्ग और दूसरा सोनमर्ग-बालतल मार्ग। पहलगांम मार्ग अपेक्षाकृत सुविधाजनक है, जबकि बालतल मार्ग हालांकि अमरनाथ की गुफा से मात्र 14 किलोमीटर की दूरी पर है, लेकिन यह मार्ग अत्यंत दुर्गम है। सामान्यतः यात्री पहलगांम मार्ग से ही अमरनाथ यात्रा करते हैं। पहलगांम से अमरनाथ की दूरी 45

किलोमीटर है। इस यात्रा मार्ग में चंदनबाड़ी, शोपनाग तथा पंचतरणी तीन प्रमुख रात्रि पड़ाव हैं। प्रथम पड़ाव चंदनबाड़ी है, जो पहलगांम से 12.8 किलोमीटर की दूरी पर है। तीर्थयात्री पहली रात यहीं पर बिताते हैं। दूसरे दिन पिस्सू घाटी की चढ़ाई प्रारंभ होती है। चंदनबाड़ी से 13 किलोमीटर दूर शोपनाग में अगला पड़ाव होता है। यह चढ़ाई अत्यंत दुर्गम है। यहीं पर पिस्सू घाटी के दर्शन होते हैं। पूरी यात्रा में पिस्सू घाटी का मार्ग बहुत कठिन है। पिस्सू घाटी समुद्र तल से 11,120 फुट की ऊंचाई पर है। इसके पश्चात यात्री शोपनाग पहुंचते हैं। लगभग डेढ़ किलोमीटर लंबाई में फैली हुई झील अत्यंत सुंदर है। तीर्थयात्री रात्रि में यहीं विश्राम करते हैं। तीसरे दिन यात्रा पुनः आरंभ होती है। इस यात्रा मार्ग में महागुणास दर्रे को पार करना पड़ता है। महागुणास से पंचतरणी



को पूरा रास्ता ढलान-युक्त है। छोटी-छोटी पांच नदियों के बहने के कारण यह स्थान पंचतरणी नाम से प्रसिद्ध हुआ है। पंचतरणी से अमरनाथ की पवित्र गुफा 6 किलोमीटर की दूरी पर है। गुफा के समीप पहुंच कर पड़ाव डाल दिया जाता है तथा प्रातःकाल पूजन इत्यादि के पश्चात शिव के हिमलिंग दर्शनोपरांत भक्तजन पुण्य लाभ के भागीदार बनते हैं।

प्राप्त होता है पुण्य लाभ: प्रतिवर्ष संपन्न होने वाली इस पुण्यदायिनी यात्रा से अनेक पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। ऐसा माना जाता है कि अमरनाथ दर्शन और पूजन से महापुण्य प्राप्त होता है। शास्त्रों में इंद्रियनिग्रह पर विशेष बल दिया गया है, जिससे मुक्ति की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में वर्णित है कि अमरनाथ यात्रा 'निग्रह' के बिना ही मुक्ति प्रदान करने वाली है, क्योंकि यात्राक्रम में आने वाली कठिनाइयों और गंतव्य-स्थल पर पहुंच कर होने वाले अनेकविध अनुभवों के कारण तीर्थयात्री को विविध प्रकार के सांसारिक कष्टों का बोध होता है। साथ ही शिव के हिमलिंग रूप के दर्शन से उसका हृदय इतना संयमित हो जाता है कि इंद्रिय-निग्रह किए बिना ही उसे मुक्ति प्राप्त होती है। भोलेनाथ भक्तों के समस्त भव रोगों और दुःखों का समूल नाश करते हैं।

श्रद्धा-सौहार्द भरी यात्रा: श्रावण मास में पवित्र हिमलिंग के दर्शनार्थ लाखों लोग भिन्न-भिन्न प्रदेशों से यहां आते हैं। अमरनाथ यात्रा से संबंधित एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यावहारिक तथ्य यह है कि यह यात्रा पारस्परिक सद्भाव के प्रचार-प्रसार का कार्य भी करती है। विभिन्न प्रांतों से शिव के दर्शनार्थ आने वाले भक्तों में परस्पर समभाव की भावना विकसित होती है। विभिन्न भाषा-भाषी लोगों में परस्पर वार्तालाप होता है, भाईचारे की भावना का विकास होता है और विभिन्न प्रांतों की भौगोलिक जानकारी का आदान-प्रदान होता है। अतः अमरनाथ तीर्थयात्रा को तीर्थार्थन के अतिरिक्त श्रद्धा, ज्ञान एवं सौहार्द के समुच्चय के रूप में भी जाना जाता है। *

अगर आप चाहते हैं कि लोग आपकी पर्सनालिटी से इंप्रेस हो, हर कोई आपसे जुड़ना चाहे, आपकी हेल्प करने को तैयार रहे, तो इसके लिए आपको खुद को कुछ क्वालिटीज को डेवलप करना होगा। इस बारे में जानिए।

पर्सनालिटी बनेगी मैग्नेटिक डेवलप करें ये क्वालिटीज

सेल्फ इंप्रूवमेंट
शिखर चंद जैन

मनीष का सोशल सर्कल देखकर उसके कुछ रिश्तेदारों को बड़ी हैरानी हुई। उसकी बेटी की शादी थी तो उसकी पूरी सोसाइटी और ऑफिस के लोग उसकी मदद के लिए ऐसे तत्पर थे, मानो वह कोई बहुत बड़ी हस्ती हो। किसी को कहने भर की देर थी काम चूटकियों में हो रहा था। कुछ रिश्तेदारों को उसके इस रुतबे से बेहद खुशी हुई, तो कुछ को ईर्ष्या भी महसूस हुई। उसके चचेरे भाई ने जरूर उसकी पीट टोकते हुए कहा, 'भाई तूने अपनी अच्छी रेपुटेशन बना रखी है। बिल्कुल चुंबक है, चुंबक।' ऐसी चुंबकीय पर्सनालिटी का स्वामी बनना बहुत कठिन बात नहीं है। इसके लिए आपको बस कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना जरूरी है।



दूसरों को स्पेशल फील कराएं: हर व्यक्ति स्वयं को महत्वपूर्ण मानता है और चाहता है कि दूसरे भी उसे मान लें। यह स्वभाव सामान्य से लेकर अति विशिष्ट तक हर व्यक्ति का होता है। सब चाहते हैं कि उसकी सराहना की जाए और वह ऐसे ही व्यक्ति को पसंद करते हैं, जो उन्हें ऐसा महत्व देता है। इसलिए मानव व्यवहार की इस मूलभूत इच्छा को समझें और लोगों के साथ ऐसा ही आचरण करें। जाहिर है, वे भी आपके साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे।



सोशल नेटवर्क बढ़ाएं: हमारे जीवन में सामाजिक संबंधों का होना बेहद जरूरी है। ये प्रोफेशनल ही नहीं, पर्सनल लाइफ में भी बहुत सपोर्ट करते हैं। लोगों से मिल-जोल बढ़ाएं। उनके साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करें। महत्वपूर्ण अवसरों पर उन्हें निमंत्रण और उपहार दें। किसी के निमंत्रण पर वहां जरूर जाएं। अगर कोई मुसीबत में है और उसे आपकी जरूरत है तो उसकी यथासंभव मदद करें। आपका मुद्दा व्यवहार और

मिलनसार स्वभाव न सिर्फ आपका सामाजिक दायरा बढ़ाता है, यह आपको उन ऊंचाइयों तक पहुंचने में मदद कर सकता है, जिनकी आप कामना करते हैं। **आभार और बधाई देना सीखें:** सहयोग या मदद के बदले आभार प्रकट करने वाले और किसी की उपलब्धि पर बधाई और शुभकामनाएं देने में आगे रहने वाले लोगों को हर कोई पसंद करता है। लेकिन ज्यादातर लोग ऐसा नहीं कर पाते। आप अगर इन दोनों गुणों को अपना लें तो तो लोग आपको जरूर पसंद करेंगे, आपको इंप्रेस देंगे।

उम्मीदें ना करें: लोगों से उम्मीदें रखने से अक्सर निराशा हाथ लगती है। जब आपकी उम्मीदें पूरी नहीं होतीं, तो आप उनके प्रति बुरा सोचने लगते हैं। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक ही है। फिर दूसरे भी आहसे दूर रहने लगते हैं। जीवन में व्यावहारिक बनें और सरल सोचें। अगर आपने किसी की मदद की है, तो वह आपका स्वभाव है और आपको सुविधा थी तो आपने वैसा किया। इस भाव से मदद करने और संपर्क रखने पर जादुई असर होता है। लोगों के एक बड़े समूह के बीच आप लोकप्रिय होने लगते हैं।

उपयोगी पेड़ वीना गौतम

पौष्टिकता और औषधीय गुणों से भरपूर अनार का वैज्ञानिक नाम 'पुनिका त्रेनटम' है। यह 'लिथरेसी' परिवार का पेड़ है। हाल के सालों में अनार एक महत्वपूर्ण नकदी फसल के रूप में उभर कर सामने आया है। अनार मध्यम आकार का झाड़ीनुमा वृक्ष होता है, जो आमतौर पर 6 से 8 फुट ऊंचा होता है, लेकिन व्यवस्थित तरीके से देखरेख करने पर इसके पेड़ 10 से 15 फीट तक भी ऊंचे हो सकते हैं। इसका फल गोलाकार, कठोर परत वाला होता है। इस कठोर परत के नीचे लाल रंग के रसदार दाने भरे होते हैं। **सदियों पुराना पेड़:** अनार मूलतः ईरान और उत्तरी भारत का देशज पेड़ माना जाता है। भारत में अनार का पेड़ प्राचीनकाल से मौजूद रहा है। हमारे प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी अनार के औषधीय गुणों का उल्लेख मिलता है। प्राचीनकाल में अनार राजा-महाराजाओं के लिए ही उपलब्ध था, यह उनके भोजन और फलाहार का हिस्सा हुआ करता था। **अनार की विभिन्न किस्में:** भारत में अनार की पाई जाने वाली सबसे लोकप्रिय किस्म 'भगवा' है। इस किस्म के फल बड़े और दाने चमकदार लाल रंग के होते हैं। निर्यात के लिए यह उपयुक्त किस्म मानी जाती है। भगवा

अच्छी सेहत के साथ अच्छी आमदनी भी कराए अनार



की जाती है। अनार को खेती के लिए उपयुक्त दशाओं की बात करें तो इसके लिए लिए कम वर्षा, हल्की दोमट मिट्टी और 5.5 से 7.5 पीएच की भूमि सबसे उपयुक्त होती है। **किसानों के लिए फायदेमंद:** एक एकड़ जमीन में करीब 400 से 500 अनार के पेड़ लग जाते हैं और हर पेड़ से कम से कम 10 से 12 किलो अनार का उत्पादन होता है। प्रति एकड़ 4000 से 6000 किलोग्राम तक अनार का उत्पादन हो सकता है। इसमें 60 हजार से 1 लाख रुपए के बीच लागत आती है। अगर इसका बाजार भाव 80 रुपए भी मिल जाए तो किसान को हर साल 3 से 4 लाख रुपए की आमदनी हो सकती है। *

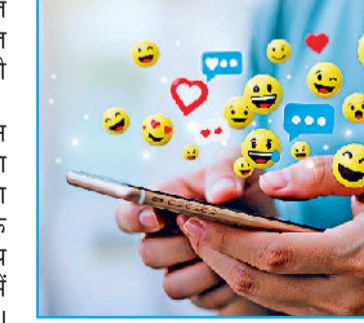
के अलावा कंधारी, गणेश, अर्का मुदुला, अर्का रक्षक, ज्योति, रूबी नाम की किस्म पाई जाती हैं। हर किस्म की कुछ न कुछ खासियत होती है।

भारत में खेती: पहले अनार का पेड़ आमतौर पर हिमालयी क्षेत्रों और दक्कन के पठार में ही पाया जाता था। मगर आजकल देश के ज्यादातर हिस्सों में इसकी अलग-अलग किस्में उगाई जाती हैं। भारत में व्यावसायिक दृष्टि से अनार का सर्वाधिक उत्पादन महाराष्ट्र में होता है। महाराष्ट्र के बाद कर्नाटक, गुजरात, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान, मध्य प्रदेश और पंजाब के कई क्षेत्रों में भी अनार की खेती की जाती है, बल्कि कई बार यह आपकी अनुशासनहीनता या असंवेदनशीलता का संकेत भी माना जा सकता है। इसलिए ऐसा करने से बचना चाहिए। इमोजी का प्रयोग मित्रता, निजी वार्तालाप में उपयुक्त है, लेकिन इसकी सीमाएं स्पष्ट होनी चाहिए। डिजिटल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ विवेक भी आवश्यक है।

टेक्नो-बिहेवियर मेधा राठी

डिजिटल युग में संवाद का स्वरूप तेजी से बदला है। सोशल मीडिया पर लेख, पोस्ट, सूचनाएं या अनुभव कुछ भी पढ़कर शीघ्रता से प्रतिक्रिया के रूप में 'लाइक', 'डिसलाइक' या किसी अन्य प्रतीक के रूप में इमोजी भेज दिया जाता है। इनमें सबसे अधिक प्रयोग होने वाला चिन्ह है- दिल। यह प्रतीक जो मूलतः प्रेम, आत्मीयता या गहरे भावनात्मक जुड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है लेकिन अब रिएक्शन का सबसे सरल प्रतीक बन गया है। चाहे विषय गंभीर हो, आध्यात्मिक हो, संघर्षपूर्ण जीवन अनुभव हो या सामाजिक समस्या-सब पर एक समान प्रतिक्रिया के रूप में यह चिन्ह लगा दिया जाता है। **प्रतीकों का भी होता है संदर्भ:** वास्तव में, 'दिल' तब उपयुक्त प्रतीक होता है, जब विषय आत्मीय हो- जैसे मित्रता, स्नेह, समर्थन या व्यक्तिगत अनुभवों में सहानुभूति। लेकिन जब विषय दार्शनिक, वैचारिक या तर्कसंगत हो या जब वह शोक, पीड़ा या सामाजिक असमानता से जुड़ा हो, तब ऐसे प्रतीकों से प्रतिक्रिया देना विषय की गंभीरता को हल्का बना देता है। यह न केवल लेखक के प्रति असंवेदनशीलता को

जब यूज करें इमोजी ना भूलें एटिकेट्स



दरशाता है, बल्कि भेजने वाले की समझ पर भी प्रश्न उठाता है। **हर जगह इमोजी भेजना उचित नहीं:** इमोजी भेजने की प्रवृत्ति सिर्फ सोशल मीडिया तक सीमित नहीं रही, अब लोग आधिकारिक ईमेल, विभागीय संदेश या वरिष्ठों को भेजे जाने वाले संवादों में भी इमोजी का प्रयोग करने लगे हैं। यह न केवल संवाद की गंभीरता को कम करता है, बल्कि कई बार यह आपकी अनुशासनहीनता या असंवेदनशीलता का संकेत भी माना जा सकता है। इसलिए ऐसा करने से बचना चाहिए। इमोजी का प्रयोग मित्रता, निजी वार्तालाप में उपयुक्त है, लेकिन इसकी सीमाएं स्पष्ट होनी चाहिए। डिजिटल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ विवेक भी आवश्यक है।

कुरु कॉमन इमोजी
स्नेह, मित्रता, सहानुभूति, प्रेरणा।
हंसी मजाक, मीम, हल्के-फुल्के निजी संवाद।
संवेदना, शोक व्यक्त करने के लिए।
ध्वजवादा, सम्मान, श्रद्धांजलि, प्रार्थना।
प्रेरक कार्य, जोश, उपलब्धि की सराहना।
किसी की उपलब्धि, प्रेरक विचार का समर्थन।
रोमांटिक या सौंदर्य-प्रशंसा से जुड़े।
तर्क, प्रश्न, विचार-उत्तेजक विषय।

सिने-जगत / अशोक जोशी

हम जो पढ़ें पर देखते हैं, वो सितारों की रील लाइफ होती है। जो जिंदगी वह वास्तव में जीते हैं, वह उनकी रियल लाइफ होती है। पढ़ें पर हमें जीवंत, सुखी, स्वस्थ और ढाई घंटे में बरसों लंबी जिंदगी के दर्शन करा देने वाले कुछ सितारे ऐसे भी हैं, जिनकी जिंदगी किसी शॉर्ट फिल्म जितनी ही छोटी रही। **कम उम्र में गुजरें बीते दौर के सितारे:** पिछली सदी में पचास का दशक हिंदी फिल्मों का आरंभिक दौर था। उस दौर में अभिनेता श्याम एक जाने माने सितारे थे, जिनकी एक फिल्म की शूटिंग के दौरान घोड़े से गिरने से मौत हो गई थी। जिस समय यह हादसा हुआ, उनकी उम्र केवल 31 बरस ही थी। के.एल. सहगल हिंदी फिल्म के मशहूर गायक और अभिनेता थे। लेकिन शराब की लत के कारण उन्हें लीवर सिरोसिस हो गया था। मात्र साढ़े ब्यालिस साल की उम्र में सहगल इस दुनिया से विदा हो गए। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को 'प्यासा', 'कागज के फूल', 'साहब बीबी और गुलाम' जैसी क्लासिक फिल्में देने वाले गुरुदत्त महज 39 वर्ष की उम्र में दुनिया छोड़ गए थे। गुरुदत्त को इन्सोमिनिया (स्लीप डिस्ऑर्डर) की बीमारी थी। कहा जाता है कि शराब के अत्यधिक सेवन और नींद की गोली के ओवरडोज के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी। **हाल में गुजर गए युवा सितारे:** बीते कुछ दशकों की बात करें तो फिल्म और टेलीविजन के कई प्रसिद्ध कलाकार बेहद कम उम्र में ही जिंदगी की जंग हार गए। सुशांत सिंह राजपूत ने सिर्फ 34 साल की उम्र में कथित आत्महत्या कर ली। हालांकि सुशांत की मौत की वजहों को लेकर आज भी कई तरह की अटकलें लगाई जाती हैं। बिग बॉस 13 के विनर और टीवी के मशहूर अभिनेता सिद्धार्थ शुक्ला की हार्ट अटैक के कारण हुई अचानक मृत्यु ने सभी को स्तब्ध कर दिया था। सिद्धार्थ सिर्फ 40 साल की उम्र में इस दुनिया से रुखसत हो गए। अभिनेता इंद्र कुमार महज 44 साल की उम्र में दुनिया छोड़ कर चले गए। उनका निधन की भी वजह हार्ट अटैक को ही माना गया था। हालांकि अपने निधन से कुछ साल पहले इंद्र कुमार एक फिल्म की शूटिंग के दौरान हेलिकॉप्टर से जमीन पर गिर गए थे और तभी से उनको कई परेशानियां शुरू हो गई थीं। **कई अभिनेत्रियां भी गुजर गईं कम उम्र में:** हिंदी सिनेमा की वीनस कही जाने वाली मोहक व्यक्तित्व की मलिका मधुबाला की मुस्कान आज भी दर्शकों के मस्तिष्क पर छाई हुई है। फिल्मी करियर के साथ ही उनका जीवन भी छोटा ही रहा। उन्होंने 36 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया था। उनकी मृत्यु का कारण दिल की बीमारी बताया जाता है। इसी तरह ट्रेजडी क्वीन मीना कुमारी की रियल लाइफ भी किसी ट्रेजडी से कम नहीं थी। पारिवारिक विवाद और दुःख से परेशान मीना कुमारी ने शराब से नाता जोड़ लिया था। अपने गम में डूबी मीना कुमारी 38 वर्ष की उम्र में इस दुनिया से कूच कर गईं। अपने जमाने की सफलतम नायिकाओं में से एक गीताबाली भी चेचक की बीमारी के कारण मात्र 34 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह गईं। प्रतिभाशाली अभिनेत्री स्मिता पाटिल जब सिनेमा में आई तो लगा था कि मीना कुमारी की खाली जगह भर जाएगी। अपने छोटे से फिल्मी जीवन में स्मिता पाटिल ने न केवल समानांतर फिल्मों में अपनी जगह बनाई बल्कि



स्मिता पाटिल

हाल में ही एक्ट्रेस-मॉडल शेफाली जरीवाला की अवाजक हुई डेथ ने सबको चौंका दिया। लेकिन शेफाली से पहले भी हिंदी सिनेमा की अलविदा कह गए हैं। ऐसे ही कुछ कलाकारों पर एक नजर, जो युवावस्था में ही इस जगह से रुखसत हो गए।

सितारे जिन्होंने कम उम्र में ही दुनिया को कह दिया अलविदा



अमिताभ बच्चन के साथ 'नमक हलाल' जैसी सुपरहिट कॉमिशियल फिल्म की सफलता में बराबर का योगदान दिया। लेकिन दुर्भाग्यवश डिलीवरी के दौरान पोलिया से पीड़ित होकर वह मात्र 29 साल की उम्र में स्वर्ग सिंघार गईं। बाद के दौर की बात करें तो उभरती नायिका दिव्या भारती को भी बेहद कम उम्र में मौत ने अपनी आगोश में ले लिया था। सफलता के सिंहासन पर बैठी यह नायिका मात्र 19 साल की उम्र में एक हादसे का शिकार हो चल बसीं। **हाल में दिवंगत हुई एक्ट्रेस:** बॉलीवुड की कुछ फिल्मों में नजर आई एक्ट्रेस जिया खान भी 25 की उम्र में दुनिया को छोड़ गईं। जिया ने खुदकुशी कर ली थी। धारावाहिक 'बालिका वधु' से अपनी पहचान बनाने वाली प्रत्युषा बनर्जी ने भी जिंदगी से हार मान कर मौत को गले लगा लिया। प्रत्युषा ने महज 24 साल की उम्र में ही आत्महत्या कर ली थी। ऐसे ही कई सफल एवं उभरती हुई अभिनेत्रियों की मृत्यु बेहद कम उम्र में हुई। अगर एकदम हाल की घटना का जिक्र करें, तो 'काटा लगा गर्ल' के नाम से मशहूर मॉडल-एक्ट्रेस शेफाली जरीवाला हाल ही में 42 वर्ष की उम्र में अचानक दुनिया को अलविदा कह गईं। *